फ़ैशन

और

हमारा मुआशरा



मुफ़्ती अहमद यार ख़ान नईमी





अल्मजमउल इस्लामी
मुबारकपुर

तमाम भाईयो को सलाम किताबे

स्केन करके पीडिएफ में आप

तक पहुँचाने के लिए इस

फ़क़ीर को अपनी दुआओ में

खास तौर पर याद रखे।

दुआओ का तालीब

सग ए रज़ा लाला ख़ान

بسم الله الرحمن الرحيم

फ़ैशन
और
हमारा मुआशरा

मुफ़्ती अहमद यार खां नईमी

प्रकाशक
अल - मजमउल इस्लामी
मिल्लत नगर, मुबारकपुर, आजमगढ़

सिलसिला इशाअ़त नं०

नाम किताब	फ़ैशन और हमारा मुआशरा
मोअल्लिफ़	मुफ़्ती अहमद यार खां नईमी
मुरत्तिब	मौलाना मुहम्मद अब्दुल मुबीन नोमानी क़ादिरी
कम्पाजिंग	महताब प्यामी,
	पयामी कम्प्यूटर ग्राफिक्स, मुबारकपुर- 9235647041
इशाअ़त	2010ई०/1431हि०
तादाद	1100
क़ीमत	25 रूपये
नाशिर	अल - मजमउ़ल इस्लामी
	मिल्लत नगर, मुबारकपुर, आज़मगढ़ उ०प्र०

AL-MAJMAUL ISLAMI

Millat Nagar, Mubarakpur,
Distt. Azamgarh (U.P.) PIN 276404

नया फ़ैशन

नए तालीम याफ़्ता लोगों ने मुसलमानों की मौजूदा पस्ती और उनकी बीमारियों का इलाज यह सोचा है कि मुसलमान मग़रिबी तहज़ीब में अपने आप को फ़ना कर डालें, इस तरह कि मर्द तो अपनी दाढ़ियां मुंडवा दें, मूंछें लम्बी करें, नेकर (जांघिया) कोट पतलून, हैट इस्तेमाल करें, नमाज़ को ख़ैरबाद कह दें और अपने को ऐसा ज़ाहिर करें कि यह किसी अंग्रेज़ के फ़र्ज़न्द हैं, और औ़रतों को घरों से बाहर निकालें , पर्दा तोड़ दें, अपनी बीवियों को साथ लेकर बाज़ारों, कम्पनी बाग़ों और तफ़रीहगाहों में घूमते फिरें, रात को बेगम को लेकर सिनेमा जाएं, बल्कि कालेज और स्कूलों में लड़के लड़कियां एक साथ बैठ कर तालीम हासिल करें। मर्द और औ़रतें मिल कर टेनिस, हाकी वग़ैरह खेलें। यह भूत इन अक़्लमन्दों पर ऐसा सवार हुआ है कि जो उनको समझाता है, उसके यह दुश्मन हो जाते हैं। उसको मुल्ला, या मस्जिद का लोटा या पुरानी टाइप का बुड्ढा कह कर उसका मज़ाक़ उड़ा कर रख देते हैं। अख़बारों और रेसालों में बराबर पर्दा के ख़िलाफ़ मज़ामीन छप रहे हैं। क़ुरआनी आयतों और अहादीसे शरीफ़ा को खींच तान कर पर्दा के ख़िलाफ़ चस्पां किया जा रहा है। मैं तो अब तक न समझ सका कि इन हरकतों से मुस्लिम क़ौम तरक़्क़ी क्योंकर कर सकेगी? और जिन साहबों ने अपने घरों में पेरिस और लन्दन का नमूना पैदा किया है उन्होंने अब तक कितने मुल्क जीते और उन्होंने मुसलमानों को अपनी ज़ात से क्या फ़ायदे पहुंचाये और इस्लाम की कितनी इशाअ़त की?

नए फ़ैशन की ख़राबियां

क़ुरआने करीम फ़रमाता है :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا ادْخُلُوا فِي السِّلْمِ كَافَّةً وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ
الشَّيْطَانِ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ. (البقرة: ٢/٢٠٨)

ऐ ईमान वालो! इस्लाम में पूरे पूरे दाख़िल हो जाओ, और शैत़ान के क़दमों पर न चलो, बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

इन्सान को कुदरत ने दो क़िस्म के आज़ा दिए हैं, एक ज़ाहिरी और दूसरे छिपे हुए। ज़ाहिरी अ़ज़्व तो सूरत, चेहरा, आंख, नाक, कान वग़ैरह हैं और छिपे हुए अ़ज़्व दिल, दिमाग़, जिगर वग़ैरह। मुसलमान कामिल ईमान वाला जब हो सकता है कि सूरत में भी मुसलमान हो और दिल से भी। यानी इस्लाम का उसपर ऐसा रंग चढ़े कि सूरत और सीरत दोनों को रंग दे। दिल में अल्लाह तआ़ला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की एताअ़त का जज़्बा मौजें मार रहा हो, उसमें ईमान की शम्अ़ जल रही हो और सूरत ऐसी हो जो अल्लाह के मह़बूब रसूलूल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को पसन्द थी, यानी मुसलमान की सी। अगर दिल में ईमान है और सूरत भगवान दास जैसी हो तो समझ लो कि इस्लाम में पूरे पूरे दाख़िल न हुए। सीरत भी अच्छी बनाओ और सूरत भी।

ग़ौर से सुनो! ह़ज़रत मुग़ीरा बिन शोबा जो कि सह़ाबिए रसूल हैं, एक बार उनकी मूछें कुछ बढ़ गई थीं, हुज़ूर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़र्माया कि ऐ मुग़ीरा! तुम्हारी मूंछें बढ़ गईं काट लो, उन्होंने ख़याल किया कि घर जाकर कैंची से काट दूंगा, मगर सरकार का फ़र्मान हुआ कि हमारी मिस्वाक लो, उस पर बढ़े हुए बाल रख कर छुरी से काट दो। यानी इतनी भी मुहलत न दी कि घर जाकर कैंची से काटें, नहीं यहां ही काट दो, जिससे मालूम हुआ कि बड़ी मूछें हुज़ूर अ़लैहिस्सलातो वस्सलाम को नापसन्द थीं। दुनिया में हज़ारों पैग़म्बर तशरीफ़ लाए मगर किसी नबी ने न दाढ़ी मुंडाई और न मूछें रखाईं, लेहाज़ा दाढ़ी फ़ित़रत यानी सुन्नते अम्बिया अ़लैहिमुस्सलाम है। ह़दीसे पाक में है "दाढ़ियां बढ़ाओं और मूछें पस्त करो और मुश्रेकीन की मुख़ालफ़त करो।"

इसके अ़लावा बहुत सी नक़ली (रवायतें) दलीलें दी जा सकती हैं। मगर हमारे नए तालीम याफ़्ता लोग नक़ली दलाइल के मुक़ाबले अ़क़ली बातों को ज़्यादा मानते हैं। गोया गुलाब के फूल के मुक़ाबले में गेंदे के

फूल उनको ज़्यादा प्यारे हैं, इस लिए अ़क़्ली बातें भी अ़र्ज़ करता हूं।

इस्लामी लिबास के फ़ायदे

सुनो! इस्लामी शक्ल और इस्लामी लिबास में इतने फ़ायदे हैं।

1. गवर्नमेण्ट ने हज़ारों मह़कमे बना दिए हैं, रेल्वे, डाकख़ाना, पुलिस, फ़ौज और कचहरी वग़ैरह और हर मह़कमे के लिए वर्दी अ़लाह़दा अ़लाह़दा मुक़र्रर कर दी कि अगर लाखों आदमियों में किसी मह़कमे का आदमी खड़ा हो तो साफ़ पहचान में आ जाता है। अगर कोई सरकारी नौकर अपनी ड्यूटी के वक़्त अपनी वर्दी में न हो तो उस पर जुर्माना होता है। अगर बार बार कहने पर न माने तो बर्ख़ास्त कर दिया जाता है। इसी त़रह़ हम भी मुह़कम-ए-इस्लाम और सलत़नते मुस्त़फ़वी और हुकूमते इलाहिया के नौकर हैं। हमारे लिए अ़लाह़दा शक्ल मुक़र्रर कर दी कि अगर लाखों काफ़िरों के बीच में खड़े हों तो पहचान लिए जाएं कि मुस्त़फ़ा अ़लैहिस्सलाम का गुलाम वह है, अगर हम ने अपनी वर्दी छोड़ दी तो हम भी सज़ा के मुस्तह़िक़ होंगे।

2. कुदरत ने इन्सान की ज़ाहिरी सूरत और दिल में ऐसा रिश्ता रखा है कि हर एक का दूसरे पर असर पड़ता है। अगर आपका दिल ग़मगीन है तो चेहरे पर उदासी छा जाती है और देखने वाला कह देता है कि ख़ैर तो है, चेहरा क्यों उदास है? दिल में खुशी है तो चेहरा भी सुर्ख़ व सफ़ेद हो जाता है। मालूम हुआ कि दिल का असर चेहरे पर होता है। इसी त़रह़ अगर किसी को दिक़ की बीमारी है तो ह़कीम कहते हैं कि उसको अच्छी हवा में रखो, अच्छे और साफ़ कपड़े पहनाओ, उसको फोलाँ दवा के पानी से गुस्ल दो, कहिए बीमारी तो दिल में है, यह ज़ाहिरी जिस्म का इलाज क्यों हो रहा है? इस लिए कि अगर ज़ाहिर अच्छा होगा तो अन्दर भी अच्छा हो जाएगा। तनदुरुस्त आदमी को चाहिए कि रोज़ाना ग़ुस्ल करे, साफ़ कपड़े पहने, साफ़ घर में रहे तो तनदुरुस्त रहेगा। इसी तरह़ ग़िज़ा का असर भी दिल पर पड़ता है। सूअर खाना शरीअ़त ने इसी लिए ह़राम फरमा दिया कि इससे बेग़ैरती पैदा होती है, क्योंकि सूअर बेग़ैरत जानवर है और सूअर खाने वाली क़ौमें भी बेग़ैरत होती हैं, जिसका तजरुबा हो रहा है (सूअर खाने से ही जान लेवा बीमारी स्वाइन फ़्लू होती है)। अगर चीते या शेर की चर्बी खाई जाए

तो दिल में सख़्ती और बर्बरियत पैदा होती है। चीते और शेर की खाल पर बैठना इसी लिए मना है कि इससे गुरूर पैदा होता है। ग़र्ज़े कि मानना पड़ेगा कि ग़िज़ा और लिबास का अस़र दिल पर पड़ता है, तो अगर काफ़िरों की त़रह़ लिबास पहना गया, या कुफ़्फ़ार की सी सूरत बनाई गई तो यक़ीनन दिल में काफ़िरों से मह़ब्बत और मुसलमानों से नफ़रत पैदा हो जाएगी। ग़र्ज़े कि आख़िर में यह बीमारी मुहलिक स़ाबित होगी। इसी लिए ह़दीस़े पाक में आया:

مَنْ تَشَبَّهَ بِقَوْمٍ فَهُوَ مِنْهُمْ۔

जो किसी दूसरी क़ौम से मुशाबहत पैदा करे वो उनमें से है।

ख़ुलास़ा यह है कि मुसलमानों की सी सूरत बनाओ ताकि मुसलमानों ही की तरह़ सीरत पैदा हो।

3. हिन्दुस्तान में अकस़र हिन्दू मुस्लिम फ़साद होता रहता है और बहुत जगह सुनने में आया कि फ़साद की हालत में बाज़ मुसलमान मुसलमानों के हाथों मारे गए क्योंकि पहचाने न गए कि यह मुसलमान हैं या हिन्दू, चुनांचे तीसरे साल जो बरैली और पीलीभीत में हिन्दू मुस्लिम फ़साद हुआ, उस जगह से ख़बरें आईं कि बहुत से मुसलमानों को खुद मुसलमानों ने हिन्दू समझ कर फ़ना कर दिया, यह इस नए फ़ैशन की बरकतें हैं, मेरे वली-ए-नेमत, मुर्शिद-ए-बरह़क़ ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल मौलाना मुह़म्मद नईमुद्दीन साह़ब क़िबला दाम ज़िल्लोहुम (रह़मतुल्लाह अ़लैहि) ने फ़रमाया कि एक दफ़ा हम रेल में सफ़र कर रहे थे कि एक स्टेशन से एक साह़ब सवार हुए जो बज़ाहिर हिन्दू मालूम होते थे, गाड़ी में जगह तंग थी। एक लालाजी से उनका जगह लेने के लिए झगड़ा हो गया, लालाजी के साथी ज़्यादा थे, इस लिए लालाजी ने उन ह़ज़रत को ख़ूब पीटा, मुसलमान मुसाफ़िर बीच बचाव में ज़्यादा न पड़े, क्योंकि समझते थे कि हिन्दू आपस में लड़ रहे हैं, हमारा ज़्यादा ज़ोर देना ख़िलाफ़े मस़्लह़त है। बेचारे शामत के मारे पिट कट कर एक तरफ़ खड़े हो गए। जब अगले स्टेशन पर उतरे तो उन्होंने कहा "अस्सलामु अ़लैकुम" तब मालूम हुआ कि ये ह़ज़रत मुसलमान हैं। तब हमने अफ़सोस किया और उनसे अ़र्ज़ किया कि ह़ज़रत आपके फ़ैशन ने आपको उस वक़्त पिटवाया। मैं जब कभी बाज़ार वग़ैरह जाता हूं तो सोचता हूं कि सलाम किसे करूं, मालूम नहीं कि हिन्दू कौन है और मुसलमान कौन। बहुत दफ़ा किसी को कहा "अस्सलामु अ़लैकुम" उन्होंने कहा "बन्दगी साह़ब" हम शर्मिन्दा हो गए। मेरा इरादा यह होता है कि जहां तक हो सके मुसलमान की दुकान से चीज़ ख़रीदूं मगर दुकानदार की शक्ल ऐसी होती है कि पहचान नहीं

होती कि यह कौन हैं। अगर दुकान पर कोई बोर्ड लगा है जिससे नाम मालूम हो गया कि यह मुसलमान की दुकान है तो ख़ैर, वरना बहुत दुश्वारी होती है। ग़रज़ कि मुसलमानों को चाहिए कि शक्ल और लिबास में कुफ़्फ़ार से अ़लाह़दा रहें।

4. किसी को नहीं मालूम कि उसकी मौत कहां होगी। अगर हम परदेस में मर गए जहां हमारी जान पहचान वाला कोई न हो तो सख़्त मुश्किल दरपेश होगी, लोग परेशान होंगे कि इनको दफ़्न करें या आग में जला दें क्योंकि सूरत से पहचान न पड़ेगी। चुनांचे चन्द साल पेशतर अ़लीगढ़ के एक साह़ब का रेल में इन्तेक़ाल हो गया, ख़बर होने पर रात में लाश उतार ली गई। मगर अब यह फ़िक्र हुई कि यह है कौन? हिन्दू या मुसलमान, इनको सुपुर्दे ख़ाक करें या आग में डालें। आख़िर उनका ख़त्ना देखा गया, तब पता लगा कि यह मुसलमान हैं। ख़ुलासा यह है कि कुफ़्फ़ार की सी शक्ल और उनका लिबास ज़िन्दगी में भी ख़तरनाक है और मरने के बाद भी।

5. ज़मीन में जब बीज बोया जाता है तो अव्वलन एक सीधी सी शाख़ ही निकलती है, फिर आकर हर तरफ़ फैलती है, फिर उसमें फल निकलते हैं, अगर कोई शख़्स़ उसकी चारों तरफ़ की शाख़ों और पत्तों को काट डाले तो फल नहीं निकल सकता। इसी तरह़ कल्मा त़य्यबा एक बीज है जो मुसलमान के दिल में बोया जाता है, फिर सूरत और हाथ पांव, आंख, नाक की तरह़ उस दरख़्त की शाख़ें चलीं कि इस कल्मा ने मुसलमान की आंख को ग़ैर सूरतों से अ़लाह़दा कर दिया, हाथ को ह़राम चीज़ों के छूने से रोक दिया, सूरत पर ईमानी आस़ार पैदा कर दिए, कान को ग़ीबत सुनने और ज़ुबान को झूठ बोलने और ग़ीबत करने से रोका। जो शख़्स़ दिल से मुसलमान तो हो मगर काफ़िरों की सी सूरत बनाए, अपने हाथ, पांव, ज़ुबान, आंख, नाक, कान को ह़राम कामों से न रोके वो उसी शख़्स की त़रह़ होगा जो आम का बीज बो दे और उसकी तमाम शाख़ें वग़ैरह काट डाले, जिस त़रह़ वो बेवक़ूफ़ फल से मह़रुम रहेगा उसी त़रह़ यह मुसलमान इस्लाम के फलों से मह़रुम रहेगा।

6. पक्का रंग वह होता है जो किसी पानी या धोबी से न छूटे और कच्चा रंग वह जो छूट जाए। तो ऐ मुसलमानो। तुम अल्लाह के रंग में रंगे हुए हो:

صِبْغَةَ اللّٰهِ وَمَنْ اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً.(البقرة: ٢/١٣٨)

हम ने अल्लाह का रंग लिया और अल्लाह के रंग से बेहतर किसका रंग।

अगर तुम कुफ़्फ़ार को देख कर अपने रंग को खो बैठो तो जान लो कि तुम्हारा रंग कच्चा था, अगर पक्का रंग होता तो औरों को रंग आते।

मुसलमानों के उज़्र

हम मुसलमानों के वो उ़ज़्र भी पेश कर दें जो कि वो बयान करते हैं और जिससे अपनी मजबूरियों का इज़हार करते हैं:

उ़ज़्र-1. खुदा दिल को देखता है शक्ल को नहीं देखता। दिल साफ़ चाहिए। ह़दीस़ में है:

اِنَّ اللّٰہَ لَا یَنْظُرُ اِلٰی صُوَرِکُمْ بَلْ یَنْظُرُ اِلٰی قُلُوْبِکُمْ.

बेशक अल्लाह तुम्हारी सूरतें नहीं देखता बल्कि वह तुम्हारे दिल देखता है।

यह उ़ज़्र पढ़े लिखे मुसलमान करते हैं।

जवाब. अच्छा साह़ब! अगर ज़ाहिर का कोई एतबार नहीं , दिल का एतबार है तो आप मेरे घर खाना खाओ या शर्बत पियो और मैं निहायत उ़म्दा बादाम का शर्बत या उम्दा बिरयानी खिला दूं पिला दूं, मगर गिलास या रक़ाबी में ऊपर की त़रफ़ ख़ूब अच्छी तरह़ गन्दगी पलीदी (नापाक चीज़) लगा दूं, आप उस बर्तन में खा लोगे? हर्गिज़ नहीं। क्यों जनाब! बर्तन का क्या एतबार, उसके अन्दर की चीज़ तो अच्छी है। जब तुम बुरे बर्तन में अच्छी ग़िज़ा नहीं खाते पीते तो रब तआ़ला तुम्हारी बुरी सूरतों के साथ अच्छे आमाल क्योंकर कुबूल फ़रमाएगा? अगर कुरआन शरीफ़ पढ़ों तो लुत्फ़ जब है कि मुंह में कुरआन शरीफ़ हो और सूरत पर उसका अ़मल हो। अगर तुम्हारे मुंह में कुरआन है और सूरत कुरआन शरीफ़ के ख़िलाफ़ तो गोया अपने अ़मल से तुम खुद झूठे हो। बादशाह के आने के लिए घर और दरवाज़ा तो साफ़ करो, क्योंकि बादशाह दरवाज़े से आएगा और घर में बैठेगा। इसी तरह कुरआन शरीफ़ के लिए दिल और सूरत दोनों संभालो। ह़दीस़ के माना यह हैं कि अल्लाह तआ़ला सिर्फ़ तुम्हारी सूरतों को नहीं देखता बल्कि सूरतों के साथ दिल को भी देखता है। अगर इसका वह मत़लब होता जो तुम समझते हो तो फिर सर पर चोटी, कान में जनेवा और पांव में धोती बांध ा कर नमाज़ पढ़ना जाइज़ होना चाहिए था, हालांकि फ़ुक़हा फ़रमाते हैं कि चोटी रखना, ज़ुन्नार बांधना कुफ़्र है।

उ़ज़्र-2. इस्लामी शक्ल से हमारी इ़ज़्ज़त नहीं होती, जब हम अंग्रेजी लिबास में होते हैं तो हमारी इ़ज़्ज़त होती है क्योंकि वह तरक़्क़ी याफ़्ता क़ौम का लिबास है।

जवाब. आदमी की इ़ज़्ज़त लिबास से नहीं बल्कि लिबास की इ़ज़्ज़त आदमी से है, अगर तुम्हारे अन्दर कोई जौहर है या अगर तुम इ़ज़्ज़त और तरक़्क़ी वाली क़ौम के फ़र्द हो, तो तुम्हारी हर तरह़ इ़ज़्ज़त होगी कोई भी लिबास पहनो। अगर इन चीज़ों से ख़ाली हो तो कोई लिबास पहनो इ़ज़्ज़त नहीं होगी। अभी कुछ दिन पहले गांधी और उसके दूसरे साथी गोल मेज़ कान्फ़्रेन्स में शरीक होने के लिए लन्दन गए, जब ख़ास पार्लियामेन्ट के दफ़्तर पहुंचे तो मिस्टर गांधी उसी चोटी और उसी लंगोटी में थे जो उनका अपना क़ौमी लिबास है।

सुभाष चन्द्र बोस ने एक बार लन्दन का सफ़र किया तो अपनी गाय और अपनी धोतिया, लोटिया अपने साथ ले गए। कहिए क्या उस लिबास से उनकी इ़ज़्ज़त घट गई। आज मुसलमानों के सिवा तमाम क़ौमें सिख, हिन्दू बल्कि काठियावाड़ में बोहरे और ख़ोजा हमेशा अपने क़ौमी लिबास में रहते हैं, सिख़ के मुंह पर दाढ़ी, सर पर बाल, हाथ में लोहे का कड़ा हर जगह रहता है। क्यों साह़ब क्या वह दुनिया में ज़लील हैं। सच है जो उनकी इस लिबास में इ़ज़्ज़त है वह तुम्हारे सूट बूट में नहीं। दोस्तो! अगर इ़ज़्ज़त चाहते हो तो सच्चे मुसलमान बनो और अपनी मुस्लिम क़ौम को तरक़्क़ी दो।

(और देखा तो यह जाता है कि जब से मुसलमानों ने ग़ैरों का लिबास पहनना शुरु कर दिया है उनकी ज़िल्लत और पिटाई में और इज़ाफ़ा ही हुआ है, इ़ज़्ज़त मिलना तो दूर की बात है। क्योंकि अब दुश्मनाने इस्लाम मुसलमानों से डरते ही नहीं वह समझते हैं कि उनको अपने लिबास से ज़्यादा हमारा लिबास पसन्द है, ये अपनी क़ौमियत खो कर हमारे अन्दर ज़म हो जाना (मिल जाना) चाहते हैं तो इनको अच्छी तरह़ मुर्ग़ा बनाओ। लेहाज़ा मुसलमानों को अब से होश मे आ जाना और अपनी अलग शनाख़्त बनाना चाहिए। मुसलमान दूसरों को अपने में मिलाने के लिए पैदा हुआ है न कि दूसरों में मिलने के लिए, आज सारी क़ौमें यही चाहती हैं कि दूसरों को अपने में मिलाएं मगर मुसलमान दूसरों में मिलने को पसन्द करता है तो भला दूसरों को अपने में क्या मिलाएगा और सच्चे

इस्लाम की दावत कैसे देगा, मुसलमान पहले खुद सच्चा हो, अपने दीन का पाबन्द हो तो सारी दुनिया खुद क़रीब होगी और इ़ज़्ज़त करती नज़र आएगी।) १२ (मुहम्मद अ़ब्दुल मुबीन नोमानी)

उ़ज़्र-3. आख़िर दाढ़ी में क्या फ़ायदा है ? कि मौल्वी इसके इतने पीछे पड़े हैं।

जवाब. दाढ़ी और तमाम इस्लामी लिबास की ख़ूबियां हम बयान कर चुके हैं, अब भी अ़र्ज़ करते हैं कि इस्लाम के हर काम में सदहा (सैकड़ों) हिकमतें हैं, सुनो! मिसवाक सुन्नत है, इसमें बहुत फ़ायदे हैं, दांतों को मज़बूत करती है, मसूढ़ों को फ़ायदामन्द है, मुंह को साफ़ करती है, गंदा दहनी (मुंह) की बीमारी को दूर करती है, मेदा को दुरुस्त करती है यानी खाना हज़्म करती है, आंखों की रौशनी बढ़ाती है, जुबान में कूवत पैदा करती है, दांतों को साफ़ रखती है, जांकनी (दम निकलने का वक़्त) को आसान करती है, बलग़म को काटती है, पित्त दूर करती है, सर की रगों को मज़बूत करती है, मौत के वक़्त कल्मा याद दिलाती है, ग़रज़ कि इसके फ़ायदे 36 हैं, देखो शामी और तिब की किताबें।

इसी तरह ख़त्ना डेढ़ सौ बीमारियों के लिए फ़ायदे मन्द है। बाह को क़वी करता है, इन्सान की कूवते मर्दानगी को बढ़ाता है, उस जगह मैल वग़ैरह जमा नहीं होने देता (जरासीम से बचाता है), तन्दुरुस्त औलाद पैदा करता है, ख़त्ना वाले की औ़रत किसी और की तरफ़ रग़बत नहीं करती, बाज़ बीमारियों में डाक्टर ग़ैर मुस्लिमों के बच्चों का भी ख़त्ना करा देते हैं।

नाखुन में एक ज़हरीला माद्दा होता है. अगर नाखुन खाने या पानी में डुबो दिए जाएं तो वह खाना बीमारी पैदा करता है, इसी लिए अंग्रेज़ वग़ैरह छुरी कांटे से खाना खाते हैं, क्योंकि ईसाइयों के यहाँ नाखुन बहुत कम कटवाते हैं और पुराने ज़माने के लोग वह पानी नहीं पीते थे जिसमें नाखुन डूब जाएं। मगर इस्लाम ने इसका यह इन्तेज़ाम फ़र्माया कि नाखुन कटवाने का हुक्म दिया और छुरी कांटे की मुसीबत से बचा लिया। इसी तरह मूछों के बालों में ज़हरीला माद्दा मौजूद है। अगर मूछें बड़ी बड़ी हों और पानी पीते वक़्त पानी में डूब जाएं तो पानी सेहत के लिए नुक़्सानदेह होगा, इसी लिए अब मौजूदा फ़ैशन के लोग मूंछ मुंडवाने लगे हैं, इसलाम ने (पहले ही) यह इन्तेज़ाम फ़र्मा दिया कि मूंछें

काटने का हुक्म दे दिया क्योंकि मूंछे मुंडवाने से नामर्दी पैदा होती है।

दाढ़ी के बहुत फ़ायदे हैं।

सबसे पहला फ़ायदा तो यह है कि दाढ़ी मर्द के चेहरे की ज़ीनत है और मुंह का नूर जैसे औ़रत के लिए सर के बाल या इन्सान के लिए आंख की पलक और भवें ज़ीनत हैं, उसी तरह मर्द के लिए दाढ़ी। अगर औ़रत अपने सर के बाल मुंडवा दे तो बुरी मालूम होगी या कोई आदमी अपनी भवें (बरौटे) और चिकें साफ़ करा दे तो वह बुरा मालूम होगा, उसी तरह मर्द दाढ़ी मुंडवाने से बुरा मालूम होता है।

दूसरा फ़ायदा. यह है कि दाढ़ी मर्द को बहुत से गुनाहों से रोकती है, क्योंकि दाढ़ी से मर्द पर बुजुर्गी आ जाती है, उसको बुरे काम करते हुए यह ग़ैरत होती है कि अगर कोई देख लेगा तो कहेगा कि ऐसी दाढ़ी और तेरे ऐसे काम, दाढ़ी की भी तुझको लाज न आई, इस ख़याल से वह बहुत सी छिछोरी बातों और खुल्लम खुल्ला बुरे काम से बच जाता है, यह आज़माइश है कि नमाज़ और दाढ़ी बेफ़ज़लेहि तआ़ला बुराइयों से रोकती है।

तीसरा फ़ायदा. यह कि दाढ़ी के बालों से कूवते मर्दानगी बढ़ती है, एक हकीम साहब के पास एक नामर्द आया जिसने शिकायत की कि मैंने अपनी कमज़ोरी का बहुत इ़लाज किया, कुछ फ़ायदा न हुआ, उन्होंने फ़रमाया कि दाढ़ी रख ले, ये उसका आख़री और तीर बहदफ़ नुस्ख़ा है, फिर फ़रमाने लगे कि कुदरत ने इन्सान के बाज़ अज़्वों का बाज़ से रिश्ता रखा है। ऊपर के दांत और दाढ़ों का आंखों से तअ़ल्लुक़ है, अगर कोई शख़्स ऊपर की दाढ़ें निकलवा दे तो उसकी आंखें ख़राब हो जाती हैं, पाँव के तलवों का भी आंखों से तअ़ल्लुक़ है कि अगर आंखों में गर्मी हो तो तलवों की मालिश की जाती है, अगर नींद न आए तो पांव के तलवों में नमक और घी की मालिश नींद लाती है। इसी तरह दाढ़ी का तअ़ल्लुक़ ख़ास मर्द की कूवतों और मनी से है। इसी वजह से औ़रत को दाढ़ी नहीं होती और नाबालिग़ बच्चा जिसमें मनी का माद्दा नहीं होता और हिजड़ा (नामर्द) यानी ज़नाना के दाढ़ी नहीं होती, बल्कि अगर किसी मर्द को दाढ़ी हो और उसके फोते (खुसिया) निकाल दिए जाएं तो दाढ़ी खुद बखुद झड़ जाएगी, जिससे मालूम होता है कि आम लोगों में जो मशहूर है कि मौल्वियों की औलाद बहुत होती है और मौल्वी की बीवी

आवारा नहीं होती, इसकी वजह दाढ़ी ही है, और नाफ़ के नीचे के बाल कूवते मर्दानगी के लिए नुक़सानदेह हैं, इसी लिए शरीअत ने उनके साफ़ करने का हुक्म दिया है। अगर हो सके तो आठवें रोज़ वर्ना पन्द्रहवें या बीसवें दिन ज़रूर अस्तुरा ले। ग़रज़ कि सुन्नत के हर काम में हिकमतें हैं।

हम ने एक किताब लिखी है "अनवारुल क़ुरआन" जिसमें नमाज़ की रकाअतें, वज़ू, ग़ुस्ल और तमाम इस्लामी कामों की हिकमतें बयान की हैं, हत्ता कि यह भी उसमें बताया गया है कि जो सज़ाएं इस्लाम ने मुक़र्रर फ़रमाई हैं मसलन चोरी की सज़ा हाथ काटना, ज़ेना की सज़ा रज्म करना, उसमें क्या हिकमतें हैं। नीज़ हमने अपने "तफ़सीरे नईमी" में इस्लामी अहकाम के फ़वाएद अच्छी तरह बयान कर दिए, उसका मुतालआ (अध्ययन/Study)करो।

मूंछ के बाल भी कूवते मर्दानगी के लिए फ़ायदेमन्द हैं, मगर उनकी नोक में ज़हरीला असर है इस लिए उनको काट तो दो मगर बिल्कुल न मूंडो।

उज़्र-4. आज दुनिया में हर जगह दाढ़ी मुण्डों की ही बादशाहत है, माल व दौलत और हुकूमत उन्हीं की है, जिससे मालूम होता है कि यह बरकत वाली चीज़ है (मुसलमान यह मज़ाक़ में कहते हैं) हालांकि सुन्नत का मज़ाक़ बहुत बुरा है।

जवाब. अगर दाढ़ी मुंडाने से बादशाहत मिल जाती है, हुकूमत, दौलत, इ़ज़्ज़त हाथ आती है तो जनाबे वाला! आपको दाढ़ी मुंडाते, हैट लगाते, कोट, पतलून पहनते हुए अ़र्सा गुज़र गया। आपको तो हुकूमत क्या कोई चीज़ भी नहीं मिली। फिर तमाम भंगी, चमार, चुहड़े और हर क़ौम यह काम करती है, वह क्यों बादशाह नहीं बन गई? दोस्तो! इ़ज़्ज़त, हुकूमत, दौलत तुमको जो भी मिलेगा वह हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की ग़ुलामी से मिलेगाः

وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ.

और तुम्हीं सर बुलन्द रहोगे अगर ईमान वाले हो।

आज ग़ैरों को इस लिए तुम्हारा हाकिम कर दिया गया कि तुम में हुकूमत की अहलियत न रही, वर्ना यह तमाम इ़ज़्ज़तें तुम्हारे ही लिए थीं, याद रखो कि सारी क़ौमें आगे बढ़ कर तरक़्क़ी करेंगी, मगर तुम साढ़े तेरह सौ बरस पीछे हट कर। देखो! तो सुलतान औरंग ज़ेब, शाह

जहां वग़ैरा इसी तरह अ़रब व अ़जम के तक़रीबन सारे इस्लामी बादशाह दाढ़ी वाले ही गुज़रे।

लतीफ़ा. एक मुसलमान हम से कहने लगे कि इस्लाम ने हम को तरक़्क़ी से रोका। मैंने कहा, वह कैसे? फ़रमाने लगेः उसने सूद तो ह़राम कर दिया और ज़कात फ़र्ज़ कर दी। फिर यह शेर पढ़ाः

क्योंकर हो इन उसूलों में इफ़लास से नजात
यां सूद तो ह़राम है और फ़र्ज़ है ज़कात।।

आज दूसरी क़ौमें सूद की वजह से तरक़्क़ी कर रही हैं, अगर हम भी सूद का लेन देन करें तो हम भी तरक़्क़ी कर सकते हैं।

हमने अ़र्ज़ किया कि आज दुनिया में जो भी मुसीबत है वह सूद ही की वजह से है, बड़े बड़े व्यापारियों का एकदम जो दिवालिया हो जाता है वह या तो सट्टे (जुए) की वजह से या हुण्डी के लेन देन (सूदी कारोबार) से। अगर आदमी अपनी पूंजी के मुताबिक़ काम करे और मेहनत व मशक़्क़त और दयानत दारी से तिजारत करे तो उसकी तिजारत ठोस और इनशाअल्लाह लाज़वाल होगी और ज़कात की वजह से सारी क़ौम की माली ह़ालत अच्छी रहेगी बशर्तेकि ज़कात को सह़ीह़ माना में ख़र्च किया जाए। ज़कात निकालने से अपना माल मह़फ़ूज़ हो जाता है जैसे कि गवर्नमेन्ट का ह़क़ अदा करने से माल मह़फ़ूज़ हो जाता है। ज़काती माल बर्बाद नहीं होता बल्कि बढ़ता है, अंगूर और बेर के दरख़्त की शाख़ें काटने से ज़्यादा फल आता है, उसी तरह ज़कात देने से माल ज़्यादा होता है। क़ुदरत ने हर चीज़ से ज़कात ली है। आपके जिस्म पर जो बीमारियां आती है यह तन्दुरुस्ती की ज़कात हैं, नाख़ुन और बाल कटवाए जाते हैं, यह अ़ज़्वों की ज़कात है। तो चाहिए कि माल की भी ज़कात हो। मुसलमानों के ज़वाल की वजह उनकी बेकारी, तेजारत से नफ़रत और आवारगी है। यह तो तजरुबा है कि मुसलमान के लिए सूद फलता नहीं आख़िर कार तबाही लाता है, दूसरी क़ौम सूद से बढ़ सकती है, मगर मुसलमान सूद लेने से न बढ़ेगा, बल्कि इनशाअल्लाह ज़कात देने से। पाख़ाना का कीड़ा पाख़ाना (गूह) खाकर ज़िन्दगी गुजारता है मगर बुलबुल की ग़िज़ा फूल है। मुसलमानो! तुम बुलबुल हो, फूल यानी ह़लाल कमाई ह़ासिल करके खाओ, ह़राम पर न ललचाओ, ह़लाल में बरकत है, ह़राम में बेबरकती, देखो एक बकरी साल में एक या दो बच्चे ही देती है और हज़ारहा बकरियां हर रोज़ जबह़ हो जाती हैं और कुतिया साल में

छ सात बच्चे देती है और कुत्ता ज़बह नहीं होता, मगर फिर भी बकरियों के झुण्ड के झुण्ड और रेवड़ देखने में आते हैं और कुत्तों का रेवड़ आज तक नज़र क्यों न पड़ा? इसी लिए कि बकरी ह़लाल है और कुत्ता ह़राम। लेहाज़ा बकरी में बरकत है।

उज़्र-5- दाढ़ी, मूंछ, कपड़ा हमारी अपनी चीज़ें हैं, जिस तरह़ चाहें इस्तेमाल करें, मौल्वी लोग इस पर क्यों पाबन्दियां लगाते हैं, घर की खेती है जिस वक़्त चाहो और जिस तरह़ चाहो काटो और इस्तेमाल करो।

जवाब- यह ख़याल ग़लत है कि यह हमारी अपनी चीज़ें हैं। हर चीज़ रब तआ़ला की है, हम को चन्द रोज़ा इस्तेमाल के लिए दी गई है, फिर हर चीज़ मालिक ही की होगी, किसी ने किसी से चर्ख़ा मांगा तो जो सूत कात लिया वह अपना, और फिर चर्ख़ा, चर्ख़ा वाले का, आ़माल सूत हैं और यह जिस्म चर्ख़ा कारख़ाने से किसी को एक मशीन मिली हो, मगर वह आदमी उस मशीन के कल पुर्ज़ों को चलाने से बेख़बर है तो मशीन के साथ एक किताब भी मिलती है, जिसमें हर पुर्ज़े के इस्तेमाल का तरीक़ा लिखा होता है और कम्पनी की तरफ़ से कुछ आदमी भी मशीन सिखाने वाले मुक़र्रर होते हैं कि बे इ़ल्म लोग उस किताब को देखें और उस उस्ताद से मशीन चलाना सीखें, अगर यूं ही कोई ग़लत़ सलत़ मशीन चलाना शुरु कर दे तो बहुत जल्द मशीन तोड़ डालेगा और मुमकिन है कि मशीन से खुद भी चोट खा जाए। इसी त़रह़ हमारा जिस्म मशीन है, हाथ पांव वग़ैरा उसके पुर्ज़े हैं। यह मशीन हमको कुदरत के कारख़ाने से मिली है, इसका इस्तेमाल सिखाने के लिए कारख़ाने के मालिक ने अपनी किताब दी, जिसका नाम है कुरआन मजीद और इस मशीन को सिखाने के लिए एक उस्तादों का उस्ताद, दुनिया भर का मुअ़ल्लिम भेजा, जिसका नामे पाक है मुह़म्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम। उस उस्ताज़ुल कुल ने हम को मशीन चला कर दिखा दी और कुरआन ने पुकार दिया किः

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ .(الاحزاب:۳۳/۲۱)

यक़ीनन तुम्हारे लिए रसूलुल्लाह की ज़िन्दगी बेहतरीन नमूना है।

ऐ ग़ाफ़िलो! ऐ मशीन वालो! अगर मशीन सह़ीह़ तरीक़े से चलाना चाहते हो तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के तरीक़े पर चलाओ, जैसे जिस्म पर जान हुकूमत करती है कि हर अ़ज़्व उसकी मर्ज़ी

से ह़रकत करता है उसी तरह इस जान पर उस सुल्ताने कौनैन सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम को ह़ाकिम बनाओ कि जो ह़रकत हो उन्हीं की रज़ा से हो। इसी का नाम तसव्वुफ़ है और यह ही ह़क़ीक़त, मारेफ़त और तरीक़त का मग़ज़ है। ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल दाम ज़िल्लोहुम (रह़मतुल्लाह अ़लैहि) ने ख़ूब फ़र्मायाः

खोल दो सीना मेरा फ़ातेह़े मक्का आकर।
काबए दिल से सनम खींच के कर दो बाहर।।
आप आ जाइए क़ालिब में मेरे जां बन कर।
सलत़नत कीजिए इस जिस्म में सुल्तां बनकर।।

इस्लामी शक्ल

इस्लामी शक्ल यह है कि सर के बाल या तो सब रखाए या सब कटवा दे, या सब मुंडाए। कुछ बाल रखना, कुछ कटवाना मना है, जैसे कि अंग्रेजी बाल में होता है और जैसे कि बाज़ लोग बीच सर पर पान रखवाते हैं, या बाज़ लोग सर के अगले हिस्से पर छज्जे रखवाते हैं या बाज़ जाहिल मुसलमान किसी बुज़ुर्ग के नाम की बच्चों के सरों पर ग़ैर मुस्लिमों की तरह चोटी रखते हैं, यह सब मना है और जिसको कुल बाल रखने हों वह या तो कान की लौ तक या कन्धों तक रखे। यानी ता बगोश (कान) या ता बदोश (कन्धा) कि यह सुन्नत है। और ज़्यादा लम्बे बाल रखना और उसमें चोटी, मांग औ़रतों की तरह़ करना मना है।

मूंछ इस क़दर काटना ज़रूरी है कि ऊपर के होंट की डोरी खुल जाए, बिल्कुल न कटवाना या बिल्कुल मुंडवा देना मना है और दाढ़ी एक मुठ्ठी रखना ज़रूरी है, यानी ठोड़ी के नीचे जो बाल हैं उनको अपनी मुठ्ठी में पकड़े, जो मुठ्ठी से आगे निकले हों वह कटवा दे, यानी मुठ्ठी से कम करना भी मना और मुठ्ठी से बहुत ज़्यादा लम्बा रखना भी मना है। अब रही आस पास की दाढ़ी यानी जबड़ों पर के बाल वह जिस क़दर गोल दायरे में आजाएं वह न कटवाए और जो दायरे से निकल जाएं वह कटवा दे। यानी जब कि ठोड़ी के नीचे के बाल एक मुठ्ठी लम्बे हों और उसके दायरे में जिस क़दर बाल आजाएं उसका कटवाना भी मना है, नाक के बाल कट़वाना और बगल के बाल उखेड़ना सुन्नत है, अगर बग़ल के बाल भी अस्तुरे से मूंडे जाएं तो भी ह़रज नहीं, नाफ़ के नीचे के बाल मूंडना सुन्नत है, कैंची से काटना नहूसत का सबब है।

हाथ पांव के नाखुन कटवाना भी सुन्नत है, बेहतर यह है कि सारा काम हर हफ़्ता में एक बार ज़रूर करें। अगर हर हफ़्ता न कर सके तो चालीस दिन से ज़्यादा देर न लगाए।

मर्द को अपने हाथ पांव में मेंहदी लगाना ज़ीनत के लिए मना है, शादियों में इसका बहुत रवाज है कि दुल्हन की तरह़ दूल्हा के पांव या हाथ मेंहदी से रंगीन कर देते हैं। यह शरअ़न मना है, इससे बचना चाहिए।

इस्लामी लिबास

इस्लामी लिबास यह है कि मर्द को नाफ़ से घुटने तक का जिस्म ढंकना फ़र्ज़ है, अगर नमाज़ में खुला रहा तो नमाज़ न होगी, और नमाज़ के सिवा भी अगरचे अकेले में ही हो, बिला वजह खोले तो गुनहगार होगा। इसके सिवा बाक़ी लिबास में बेहतर यह है कि पगड़ी सर पर बांधे और पुरी आस्तीन की क़मीस़ या कुर्ता पहने और टख़्नों से ऊंचा तहबन्द या पाजामा पहने। इन कपड़ों के सिवा अचकन, वास्केट जो कुछ भी पहने वह काफ़िरों के लिबास की तरह़ न हो। पगड़ी के नीचे टोपी होना चाहिए और अगर टोपी न हो तो भी सर की खोपड़ी ढंक ले। अगर खोपड़ी खुली रही और आस पास पगड़ी लपेटी रही तो सख़्त बुरा है और अगर फ़क़त टोपी पहने तो ऐसी टोपी से बचे जो कुफ़्फ़ार या फ़ासिक़ों की ख़ास़ टोपी है, जैसे गांधी कैप, हैट, हिन्दुवानी गोल टोपी, एक क़ायदा याद रखो वह यह कि जो लिबास काफ़िरों की क़ौमी निशानी हो, उसका इस्तेमाल मुसलमानों को ह़राम है जैसे हैट और हिन्दुवानी धोती वग़ैरह और जो लिबास कि काफ़िरों की मज़हबी पहचान बन चुका है उसका इस्तेमाल कुफ़्र है जैसे कि हिन्दुवानी चोटी और ज़ुन्नार और ईसाई क़ौम का सुलैबी(+इस शक्ल की)निशान वग़ैरह। यानी जिस लिबास को देख कर लोग जानें कि यह हिन्दु या ईसाई का लिबास है उस लिबास से मुसलमानों को बचना अज़हद ज़रूरी है।

दूसरी ज़रूरी बातें

♦ अपने घर में अल्लाह तआ़ला और रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का चर्चा रखो। ♦ अपने बीवी बच्चों को नमाज़ का सख़्त पाबन्द बनाओ, सात बरस के बच्चों को नमाज़ का हुक्म दो। ♦ और दस बरस के बच्चों को मार मार कर नमाज़ पढ़ाओ। ♦ रात को

जल्दी सो जाओ सुबह को जल्दी जागो, अपने बच्चों को जल्द जगा दो क्योंकि वह रह़मत के नाज़िल होने का वक़्त है। ♦बच्चों को तालीम दो कि वह हर काम बिस्मिल्लाह से शुरू करें। ♦और सुबह़ के वक़्त तुम्हारे घरों से क़ुरआने करीम की आवाज़ें आती हों कि क़ुरआन शरीफ़ की आवाज़ मुसीबतों को टालती है, एक घन्टा इन नेक कामों में ख़र्च करो, फिर अल्लाह का नाम लेकर दुनियावी कारोबार में मशग़ूल हो जाओ। (तो इनशाअल्लाह बरकत ही बरकत है)।

औरतों के लिए परदा ज़रूरी है

औरतों के लिए पर्दा बहुत ज़रूरी है और बेपर्दगी बहुत ही नुक़्सान देह है। ऐ मुस्लिम क़ौम! अगर तू अपनी दीनी और दुनियवी तरक़्क़ी चाहती है तो औ़रतों को इस्लामी हुक्म के मुताबिक़ पर्दे में रख, हम इसके मुतअल्लिक़ एक मुख़्तस़र सी गुफ़्तगू करके पर्दे के अक़्ली और नक़्ली दलाइल और बेपर्दगी के नुक़सानात बयान करते हैं।

क़ुदरत ने अपनी मख़लूक़ को अ़लाह़दा अ़लाह़दा कामों के लिए बनाया है और जिसको जिस काम के लिए बनाया है, उसके मुताबिक़ उसका मिज़ाज बनाया है। हर चीज़ से क़ुदरती काम लेना चाहिए जो ख़िलाफ़े फ़ितरत काम लेगा वह ख़राबी में पड़ेगा, इसकी सैकड़ों मिसालें हैं, टोपी सर पर रखने और जूता पांव में पहनने के लिए है। जो जूता सर पर बांध ले और टोपी पांव में लगा ले वह दीवाना है, गिलास पानी पीने और उगलदान थूकने के लिए है, जो कोई उगलदान में पानी पिए और गिलास में थूके वह पूरा पागल है, बैल की जगह घोड़ा और घोड़े की जगह बैल काम नहीं दे सकता, इसी तरह इन्सान के दो गरोह किए गए हैं, एक औरत, दूसरे मर्द, औरत को घर में रह कर अन्दरूनी ज़िन्दगी संभालने के लिए बनाया गया है और मर्द को बाहर फिर कर खाने और बाहर की ज़रूरियात को पूरा करने के लिए बनाया। मस़ल मशहूर है कि पचास औरतों की कमाई में वह बरकत नहीं जो एक मर्द की कमाई में है और पचास मर्दों से घर में वह रौनक़ नहीं जो एक औ़रत से है। इसी लिए शौहर के ज़िम्मे बीवी का सारा ख़र्च रखा है और बीवी के ज़िम्मे शौहर का ख़र्चा नहीं, क्योंकि औ़रत कमाने के लिए बनी ही नहीं, इसी लिए औ़रतों को वह चीजे दीं जिनसे उनको

मजबूरन घर में बैठना पड़े, और मर्दों को उनसे आज़ाद रखा, जैसे बच्चे जनना, हैज़ व नेफ़ास आना, बच्चों को दूध पिलाना वग़ैरह, इसी लिए बचपन से ही लड़कों को भाग दौड़, उछल कूद के खेल पसन्द होते हैं जैसे कबड्डी, कसरत, डण्ड लगाना वग़ैरह। और लड़कियों को क़ुदरती तौर पर वह खेल पसन्द होते हैं जिनमें भागना, दौड़ना न हो, बल्कि एक जगह बैठे रहना पड़े जैसे गुड़िया से खेल, सीना पिरोना, छोटी छोटी रोटियां पकाना, झाड़ू देना वग़ैरह। आप ने किसी छोटी बच्ची को कबड्डी खेलते, डण्ड लगाते न देखा होगा। इससे मालूम होता है कि क़ुदरत ने लड़कों को बाहर के लिए और लड़कियों को घर के अन्दर के लिए पैदा किया है। अब जो शख़्स औरतों को बाहर निकाले या मर्दों को अन्दर रहने का मश्वरा दे वह ऐसा ही दीवाना है जैसा कि वह जो टोपी पांव में और जूता सर पर रखने का मश्वरा दे, जब आपने इतना समझ लिया कि मर्द और औ़रत एक ही काम के लिए न बने बल्कि अलाहदा अ़लाहदा कामों के लिए तो अब जो कोई इन दोनों फ़रीक़ों को एक काम सुपुर्द करना चाहे, वह क़ुदरत का मुक़ाबला करता है, उसको कभी भी कामयाबी न होगी, गोया यूं समझो कि औ़रत और मर्द ज़िन्दगी की गाड़ी के दो पहिए हैं, अन्दरूनी और घरेलू कामों के लिए औ़रत और बाहर के लिए मर्द, अगर आपने औ़रत और मर्द दोनों को बाहर निकाल दिया तो गोया आपने ज़िन्दगी की गाड़ी का एक पहिया निकाल दिया तो यक़ीनन गाड़ी न चल सकेगी।

अब हम पर्दा के मुतअ़ल्लिक़ अक़्ली और नक़्ली दलाइल अ़र्ज़ करते हैं।

परदे के नक़ली दलाइल

♦ सब मुसलमान जानते हैं कि नबी-ए-करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की बीवियां मुसलमानों की माएं हैं, ऐसी माएं कि तमाम जहान की माएं उनके क़दमें पाक पर क़ुर्बान। अगर वह बीवियां मुसलमानों से पर्दा न करतीं तो ज़ाहिरन कोई हरज नहीं मालूम होता था, क्योंकि औलाद से पर्दा कैसा। मगर क़ुरआने करीम ने उन पाक बीवियों को ख़िताब करते हुए फ़र्माया:

وَقَرْنَ فِي بُيُوتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُولَىٰ.(الاحزاب:٣٣/٣٣)

यानी ऐ नबी की बीवियों! तुम अपने घरों में ठहरी रहा करो और बे पर्दा न रहा करो, जैसे अगली जाहिलियत की बेपर्दगी।

इसमें तो उन बीवियों से कलाम था, अब मुसलमानों से हुक्म हो रहा है:

وَإِذَا سَأَلْتُمُوهُنَّ مَتَاعًا فَاسْأَلُوهُنَّ مِن وَرَآءِ حِجَابٍ.(الاحزاب:٥٣)

यानी "ऐ मुसलमानो! जब तुम नबी की बीवियों से कोई इस्तेमाल की चीज़ मांगो तो पर्दे के बाहर से मांगो।"

देखो, बीवियों को उधर घरों में रोक दिया और मुसलमानों को बाहर से कोई चीज़ मांगने का यह तरीक़ा सिखाया।

♦ मिश्कात बाबुन्नज़र इलल मख़्तूबा में है कि एक दिन रसूलुल्लाह सल्लाहु अ़लैहि वसल्लम अपनी दो बीवियों ह़ज़रत उम्मे सलमा और मैमूना रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हुमा के पास तशरीफ़ फ़रमा थे कि अचानक ह़ज़रत अ़ब्दुल्लाह इब्ने उम्मे मक्तूम रज़िअल्लाहु अ़न्हु जो कि नाबीना थे, आ गए, हुज़ूर ने उन दोनों बीवियों से फ़र्माया कि "اِحْتَجِبَا مِنْهُ" इन से पर्दा करो, उन्होंने अ़र्ज़ किया या रसूलुल्लाह! यह तो नाबीना हैं, फ़र्माया, तुम तो नाबीना नहीं हो। (मिशकातुल मसाबीह बाबुन्नज़र इललमख़तूबह, अलफ़सलुस्सानी, स0:269, मजलिसे बरकात)

इस से मालूम हुआ कि सिर्फ़ यही ज़रूरी नहीं कि मर्द औ़रत को न देखे बल्कि यह भी ज़रूरी है कि अजनबी औ़रत ग़ैर मर्द को न देखे, देखो यहां मर्द नाबीना हैं मगर पर्दे का हुक्म दिया गया।

♦ एक लड़ाई में हुज़ूरे अनवर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम तशरीफ़ ले जा रहे थे, आगे आगे अन्जशा रज़िअल्लाहु अ़न्हु कुछ गीत गाते हुए जा रहे थे, लश्कर के साथ कुछ बापर्दा औ़रतें भी थीं, ह़ज़रत अन्जशा बहुत खुश आवाज़ थे। इरशाद फ़र्माया: ऐ अन्जशा! अपना गीत बन्द करो, क्योंकि मेरे साथ कच्ची शीशियां हैं। (दिखो मिश्कात बाबुल बयान वश्शेर)

इसमे औ़रतों के दिलों को कच्ची शीशियां फ़र्माया, जिससे मालूम हुआ है कि पर्दे में रह कर भी औ़रत मर्द का और मर्द औ़रत का गाना न सुनें। (आ़फ़ियत इसी में है)

♦ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के ज़माने में औ़रतों को भी हुक्म था कि नमाज़े ईद और दूसरी नमाज़ों में ह़ाजिर हुआ करें, इसी तरह वाज़ के जलसों में शिरकत किया करें क्योंकि इस्लाम बिल्कुल नया नया दुनिया में आया था, अगर हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम का वाज़ औ़रतें न सुनतीं तो शरीअ़त के हुक्म अपने लिए कैसे मालूम

करतीं, मगर फिर भी उनके निकलने में बहुत पाबन्दियां लगा दी गई थीं कि खुशबू लगा कर न निकलें, बीच रास्ता में न चलें, किसी ग़ैर से बात न करें।

फ़जर की नमाज़ इस क़दर अंधेरे में पढ़ी जाती थी कि औरतें पढ़ कर निकल जाएं और कोई पहचान न सके, औरतें मर्दों से बिल्कुल पीछे खड़ी होती थीं, लेकिन हज़रत उमर रज़िअल्लाहु तआला अन्हु ने अपनी ख़िलाफ़त के ज़माने में उनको मस्जिदों में आने और ईदगाह जाने से भी रोक दिया, औरतों ने हज़रत आयशा सिद्दीक़ा रज़िअल्लहु तआला अन्हा से शिकायत की कि हम को हज़रत उमर रज़िअल्लाहु तआला अन्हु ने नेक कामों से रोक दिया। हज़रत आयशा रज़िअल्लहु अन्हा ने फ़रमाया, अग़र हुज़ूर अ़लैहिस्सलाम भी इस ज़माने को देखते तो औरतों को मस्जिदों से रोक देते। देखो शामी वग़ैरा।

इन अहादीस़ में ग़ौर करो कि वह ज़माना ख़ैर व बरकत का, यह ज़माना शर व फ़साद का, उस वक़्त आ़म मर्द परहेज़गार, अब निहायत आज़ाद फ़ुस्साक़ व फ़ुज्जार, उस वक़्त आ़म औरतें पाक दामन ह़या वाली और शर्मीली, अब आ़म औरतें बेग़ैरत, आज़ाद और बेशर्म, जब उस वक़्त औरतों से पर्दा कराया गया तो क्या यह वक़्त उस वक़्त से अच्छा है?

♦ हमने मुख़्तसर तरीक़े से कुरआन व ह़दीस़ की रौशनी में पर्दे की ज़रूरत बयान की, अब फ़िक़्ह की भी सैर करते चलिए। फ़ुक़हा फ़र्माते हैं कि औरत के सर से निकले हुए बाल और पांव के कटे हुए नाख़ुन भी ग़ैर मर्द न देखे। (देखो शामी, बाबुस्सित्र)

औरत पर जुमा की नमाज़ फ़र्ज़ नहीं, ईद, बक़रीद की नमाज़ वाजिब नहीं, क्यों? इस लिए कि यह नमाज़ें जमाअ़त से मस्जिदों में ही होती हैं और औरतों को बिला ज़रूरते शरई घर से निकलने की इजाज़त नहीं, औरत पर ह़ज के लिए सफ़र करना उस वक़्त तक फ़र्ज़ नहीं जब तक कि उसके साथ अपना मह़रम न हो। यानी बाप, बेटा या शौहर वग़ैरा। औरत का मुंह ग़ैर मर्द न देखे। (देखो शामी, बाबुस्सित्र)

हज़रत फ़ातमा ज़हरा रज़िअल्लाहु तआला अन्हा ने वसिय्यत फ़रमाई थी कि मुझे रात में दफ़्न किया जाए, क्यों? इस लिए कि अगर दिन में दफ़्न किया गया तो कम अज़ कम दफ़्न करने वालों को मेरे जिस्म का अन्दाज़ा तो हो जाएगा, यह भी मन्ज़ूर नहीं, ग़रज़ कि पर्दा की वजह से

शरीअ़त ने बहुत से हुक्म औरतों से उठा लिए।

ग़ौर तो करो! कि जब औरतों को मस्जिद जाने की इजाज़त नहीं, क़ब्रिस्तान जाने की इजाज़त नहीं, ईद गाह में जाकर ईद पढ़ने की इजाज़त नहीं तो बाज़ारों, कालेजों और कम्पनी बाग़ों में सैर के लिए जाने की इजाज़त क्योंकर होगी, क्या बाज़ार, कालेज और कम्पनी बाग़ मस्जिदों और मक्का शरीफ़ से बढ़ कर हैं?

ज़रूरी नोट- जिन अह़ादीस़ में औरतों का बाहर निकलना आता है वह या तो पर्दा फ़र्ज़ होने से पहले था या किसी ज़रूरत की वजह से पर्दे के साथ था। उन अह़ादीस़ को बग़ैर सोचे समझे बूझे बेपर्दगी के लिए आड़ बनाना महज़ नादानी है, इसी तरह़ उस ज़माने में औरतों का जेहादों में शिरकत करना इस वजह से था कि उस वक़्त मर्दों की तादाद थोड़ी थी। अब भी अगर किसी जगह मुसलमान मर्द थोड़े से हों और कुफ़्फ़ार ज़्यादा और जेहाद फ़र्ज़ ऐन हो जाए तो औरतें जेहाद में ज़रूर जाएं। उन जेहादों को इस ज़माने की बेहयाई के लिए आड़ न बनाओ, अब जेहाद के बहाने से औरतों को मर्दों के सामने नंगा परेड कराया जाता है, बाज़ दफ़ा मुजाहिदीन ने ज़रूरतन घोड़ो के पेशाब पिए, दरख़्तों के पत्ते खाए, क्या अब भी बिला ज़रूरत यह काम कराए जाएंगे? अल्लाह तआ़ला वह वक़्त न लाए जब जिहाद में औरतों की ज़रूरत पड़े।

परदे के अक़ली दलीलें

यहां तक तो नक़ली दलाइल से हमने पर्दे की ज़रूरत साबित कर दी, अब अक़्ली दलीलें भी सुनिए।

♦ औरत घर की दौलत है, और दौलत को घर में छुपा कर रखा जाता है, हर एक को दिखाने से ख़तरा है कि कोई चोरी न कर ले, उसी तरह औरत को छुपाना और ग़ैरों को न दिखाना ज़रूरी है।

♦ औरत घर में ऐसी है जैसे चमन में फूल, और फूल चमन ही में हरा भरा रहता है, अगर तोड़ कर बाहर लाया जाए तो मुर्झा जाएगा, उसी तरह औरत का चमन उसका घर और उसके बाल बच्चे हैं, उसको बिला वजह बाहर न लाओं वरना मुर्झा जाएगी।

♦ औरत का दिल निहायत नाज़ुक है, बहुत जल्द हर तरह़ का असर कुबूल कर लेता है, इस लिए उसको कच्ची शीशियां फ़रमाया गया। हमारे यहां भी औरत को सिन्फ़े नाज़ुक कहते हैं और नाज़ुक चीज़ों को

पत्थरों से दूर रखते हैं कि टूट न जाए, ग़ैरों की निगाहें उसके लिए मज़बूत पत्थर हैं इस लिए उसको ग़ैरों से बचाओ।

♦ औरत अपने शौहर और अपने बाप दादा बल्कि सारे ख़ानदान की इज़्ज़त और आबरू है और उसकी मिसाल सफ़ेद कपड़े की सी है, सफ़ेद कपड़े पर मामूली सा दाग़ धब्बा दूर से चमकता है और ग़ैरों की निगाहें उसके लिए एक बदनुमा दाग़ हैं इस लिए उसको इन धब्बों से दूर रखो।

♦ औरत की सबसे बड़ी तारीफ़ यह है कि उसकी निगाह अपने शौहर के सिवा किसी पर न हो। इस लिए कुरआने करीम ने हूरों की तारीफ़ में फ़रमाया:

قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ۔

आंख उठा कर ग़ैर मर्दों को न देखने वालियां।

अगर उसकी निगाह में चन्द मर्द आगए तो यूं समझो कि औरत अपने जौहर खोचुकी, फिर उसका दिल अपने घर बार में न लगेगा, जिससे यह घर आख़िर तबाह हो जाएगा।

एतराज़- बाज़ लोग पर्दे के मस्अले पर दो एतराज़ करते हैं, अव्वल यह कि औरतों का घरों में क़ैद रखना उन पर ज़ुल्म है, जब हम बाहर की हवा खाते हैं तो उनको इस नेमत से महरूम क्यों रखा जाए। दूसरे यह कि औरत को पर्दे में रखने की वजह से उसको तपे दिक़ (टी०बी०) हो जाती है, इस लिए ज़रूरी है कि उनको बाहर निकाला जाए।

जवाब- अव्वल सवाल का जवाब तो यह है कि घर औरत के लिए क़ैद ख़ाना नहीं, बल्कि उसका चमन है। घर के कारोबार और अपने बाल बच्चों को देख कर वह ऐसी खुश रहती है जैसे चमन में बुलबुल, घर में रखना उस पर ज़ुल्म नहीं बल्कि उसकी इज़्ज़त व इस्मत की हिफ़ाज़त है, उसको कुदरत ने इसी लिए बनाया है। बकरी इसी लिए है कि रात को घर में रखी जाए और शेर चीता और मुहाफ़िज़ कुत्ता इस लिए है कि उनको आज़ाद फिराया जाए। अगर बकरी को आज़ाद किया तो उसकी जान ख़तरे में है, उसको शिकारी जानवर फाड़ डालेंगे।

दूसरे सवाल का जवाब मैं क्या दूं, खुद तज्रेबा दे रहा है, वह यह कि औरत के लिए पर्दा तपे दिक़ का सबब नहीं, हमारी पुरानी बुज़ुर्ग औरतें घर के दरवाज़े से भी बेख़बर थीं, मगर वह जानती भी न थीं कि दिक़ किसे कहते हैं। और आजकल बेपर्दगी में अव्वल नम्बर दो सूबे हैं, एक

काठियावाड़ और दूसरा पंजाब। मगर अल्लाह तआला की शान है कि इन ही दोनों सूबों में दिक़ ज़्यादा है। यू०पी० में आम तौर पर शरीफ़ों की बहु बेटियां पर्दा नशीं हैं। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से उनमें दिक़ बहुत ही कम है। बल्कि अगर कहा जाए कि दिक़ है ही नहीं तो भी बेजा न होगा। और जनाब अगर पर्दे से दिक़ पैदा होती है तो मर्दों को दिक़ क्यों होती है?

दोस्तो! दिक़ की वजह कुछ और है, याद रखो तनदुरुस्ती के दो बड़े उसूल हैं, उनकी पाबन्दी करो, इनशाअल्लाह तनदुरुस्त रहोगे, अव्वल यह कि भूखे हो कर खाओ और पेट भर कर न खाओ, बल्कि रोटी से भूखे उठो। और दूसरे यह कि थक कर सोओ। पहले औरतें चाय को जानती भी न थीं, घर में मेहनत व मशक़्क़त के काम करती थीं, चक्की पीसना, ग़ल्ला साफ़ करना, इनसे ख़ूब पसीना आता था, भूख खुल कर लगती थी और रात को चारपाई पर ख़ूब बेहोशी की नींद आती थी, इस लिए तनदुरुस्त रहती थीं। आज हम देखते हैं कि पर्दे वाली औरतें हश्शाश बश्शाश मालूम होती हैं, उनके चेहरे तर व ताज़ा होते हैं, मगर आवारा और बे पर्दा औरतें ऐसी मालूम होती हैं जैसे कि इस फूल को लू लग गई हो।

दोस्तो! यह सब बहाने हैं, ज़रूरी है कि मकान खुले हुए हवादार और साफ़ हों। अपने मकानों के सहन बड़े और खुले हुए हवादार रखो और औरतों बच्चों को चाय और दूसरी खुश्क चीज़ों से बचाओ और दूध घी वग़ैरा का इस्तेमाल रखो, औरतों को आराम तलब न बनाओ।

इस्लामी परदा और तरीक़ए ज़िन्दगी

औरत का जिस्म सर से पांव तक सतर है जिसका छुपाना ज़रूरी है, सिवाय चेहरे और कलाइयों तक हाथों और टख़ने से नीचे तक पांव के, कि इन का छुपाना नमाज़ में फ़र्ज़ नहीं, बाक़ी हिस्सा अगर खुला होगा तो नमाज़ न होगी, लेहाज़ा उसका लिबास ऐसा होना चाहिए जो सर से पांव तक उसको ढका रखे और इस क़दर बारीक कपड़ा न पहने जिससे सर के बाल या पांव की पिण्डलियां या पेट ऊपर से नंगा मालूम हो, घर में अगर अकेली या शौहर या मां बाप के सामने हो तो दुपट्टा उतार सकती है लेकिन अगर दामाद या दूसरा क़राबत दार हो तो सर बाक़ायदा ढका हुआ होना ज़रूरी है और शौहर के सिवा जो भी घर में

आए वह आवाज़ से ख़बर कर के आए। अजनबी औरत को सिवाय चन्द सूरतों के देखना मना है।

1. तबीब (डाक्टर) मरीज़ा की मरज़ की जगह को।

2. जिस औरत के साथ निकाह़ करना है उसको छुप कर देख सकता है।

3. गवाह जो औरत के मुतअल्लिक़ गवाही देना चाहे।

4. क़ाज़ी जो औरत के मुतअल्लिक़ कोई हुक्म देना चाहे, वह भी बक़दरे ज़रूरत देख सकता है।

मस्अला- आवारा औरतों से भी शरीफ़ औरतें पर्दा करें। (दुर्रे मुख़्तार)

औरतों को कब निकलना जाइज़ है

औरत को अपने घर से निकलना भी मना है सिवाय चन्द जगहों के मसलनः

1. **क़ाबिलाः** यानी दाई का पेशा करने वाली औरत घर से निकल सकती है।

2. **शाहिदाः** गवाही देने के लिए औरत क़ाज़ी के दरबार में जा सकती है।

3. **ग़ासिलाः** जो औरत मुर्दा औरतों को ग़ुस्ल देती है वह भी इस ज़रूरत से निकल सकती है।

4. **कासिबाः** जिस औरत का कोई कमाई करने वाला न हो वह रोज़ी ह़ासिल करने के लिए घर से निकल सकती है।

5. **ज़ाएराः** वालेदैन और ख़ास अहले क़राबत से मिलने के लिए भी घर से निकल सकती है। अगर इसकी पूरी तह़क़ीक़ करना हो तो आ़ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा क़ुद्देस सिर्रोहु की किताबः مروج النجا لخروج النساء का मुतालआ करो। हमने जो कहा कि इन मौक़ों में औरत घर से निकल सकती है उसके माना यह हैं कि पर्दा से निकले, इस तरह़ न निकले जैसे आज कल रवाज है कि या तो बे बुर्क़ा बाहर फिरती हैं या अगर बुर्क़ा है तो मुंह खुला हुआ और बुर्क़ा भी निहायत ख़ुशनुमा और चमकदार कि दूसरे मर्दों की उस पर ख़्वाह मख़्वाह नज़र पड़े, यह जाइज़ नहीं।

यह अह़काम थे घर से बाहर निकलने के , अब रहा सफ़र करना इसके मुतअल्लिक़ यह ज़रूर याद रखो कि औरत को अकेले या किसी

अजनबी मर्द के साथ सफ़र करना ह़राम है, ज़रूरी है कि उसके साथ कोई मह़रम हो, आज कल जो रवाज हो गया है कि घर को ख़त लिख दिया (या फ़ोन कर दिया) कि हम ने अपनी बीवी को फ़ोलां गाड़ी पर सवार कर दिया है, तुम स्टेशन पर आकर उतार लेना, यह नाजाइज़ भी है और ख़तरनाक भी।

देवर और बहनोई वग़ैरह से बड़े बड़े घरों में भी पर्दा नहीं बल्कि बाज़ औरतें तो कहती हैं कि उन से पर्दा करने की ज़रूरत ही नहीं। यह मह़ज़ ग़लत है। ह़दीसे पाक में इर्शाद हुआ कि "الحمو الموت" देवर तो और भी ज़्यादा मौत है। बाज़ जगह उन से हंसी और मज़ाक़ तक किया जाता है, ख़याल रखो कि जिस औरत से कभी भी निकाह़ हो सके उससे पर्दा ज़रूरी है कि वह अजनबी है और जिससे कभी भी निकाह़ जाइज़ न हो जैसे दामाद, रेज़ाई बेटा, बाप, भाई, ससुर वग़ैरह तो उनसे पर्दा ज़रूरी नहीं।

अगर उन लोगों से (जिनसे पर्दा ज़रूरी है) बाक़ायदा पर्दा न हो सके तो कम अज़ कम घूंघट से और उनके सामने ह़या और शर्म से रहना ज़रूरी है।

ऐसा बारीक लिबास न पहनो जिससे नंगी मालूम हो और ऐसा लिबास न पहनो जो पिण्डलियों से बिल्कुल चिमट जाता हो और जिससे बदन का अन्दाज़ा होता हो, हां अगर उस घर में सिवाय शौहर वग़ैरा के कोई अजनबी न आता हो तो कोई ह़रज नहीं, मगर ऐसे घर आज कल मुश्किल से मिलेंगे। डा० इक़बाल ने ख़ूब कहा हैः

चु ज़हरा बाश अज़ मख़्लूक़ रूपोश।
कि दर आगोश शब्बीरे बबीनी।।

यानी ह़ज़रत फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा की तरह़ अल्लाह वाली पर्दादार बनो ताकि अपनी गोद में इमाम हुसैन रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु जैसी औलाद देखो।

लड़कियों की तालीम

अपनी लड़की को वह इल्म व हुनर ज़रूर सिखा दो जिसकी उसको जवान हो कर ज़रूरत पड़ेगी। लिहाज़ा सबसे पहले लड़की को पाकी, पलीदी, ह़ैज़ व निफ़ास के शरई मस्अले, रोज़ा, नमाज़, ज़कात वग़ैरा के मसाइल पढ़ा दो, यानी क़ुरआन शरीफ़ और दीनियात के रिसाले पढ़ा दो, फिर कुछ ऐसी

अख़्लाक़ी किताबें जिनमें शौहर के हुक़ूक़ बजा लाने, बच्चों के पालने, सास नन्दों से मेल महब्बत रखने के तरीक़े सिखाए गए हों, वह भी ज़रूर पढ़ा दो, बेहतर यह है कि उनको नबीए करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की तारीख़ भी मुतालआ कराओ, ज़िससे दुनिया में रहने सहने का ढंग आजाए। इसके बाद हर तरह का खाना पकाना, बक़दरे ज़रूरत सीना पिरोना और दुसरी ज़नाना दस्तकारी और सूई का हुनर ज़रूर सिखा दो, क्योंकि सूई ही वह चीज़ है जिसकी ज़रूरत मरने के बाद भी पड़ती है, यानी मुर्दा सिला हुआ कफ़न पहन कर क़ब्र में जाता है। सूई औरतों का ख़ास हुनर है कि अगर (खुदा न करे) कभी औरत पर कोई मुसीबत पड़ जाए या बेवा हो जाए और किसी मजबूरी की वजह से दूसरा निकाह़ न कर सके तो घर में आबरू से बैठ कर दस्तकारियों से पेट पाल सके। आज कल खाना पकाने और सीने पिरोने की बहुत सी किताबें छप चुकी हैं, चुनां चे "देहली का बावर्ची ख़ाना, ख़्वाने नेमत, ख़्वाने यग़मा" खाने पकाने के हुनर के लिए ज़रूर पढ़ा दो। बल्कि उनसे हर तरह का खाना पकवा लो। और दोस्तो! तीन चीज़ों से अपनी लड़कियों और बीवियों को बहुत बचाओ, एक नाविल, दूसरे कालेज और स्कूलों की (बेपर्दा) तालीम, तीसरे थियेटर और सिनेमा। यह तीन चीज़ें लड़कियों के लिए ज़हरे क़ातिल हैं। इस वक़्त लड़कियों में जिस क़दर शोख़ी, आज़ादी और बेग़ैरती है वह सब इन तीन ही की वजह से है। हम ने देखा कि लड़कियों के लिए पहले तो ज़नाना स्कूल खुले और उनमें पर्दादार गाड़ियां बच्चियों को लाने और ले जाने के लिए रखी गईं। अगरचे उनमें नाम का पर्दा था, मगर ख़ैर कुछ आर और शर्म थी, फिर वह गाड़ियां बन्द हुईं और सिर्फ़ एक औरत जिसको मामा कहते थे लाने और पहुंचाने के लिए रह गई फिर वह भी ख़त्म। सिर्फ़ यह रहा कि जवान लड़कियां बुर्क़ा पहन कर आएं, फिर यह भी ख़त्म हुआ, आज़ादाना तौर पर आने जाने लगीं। फिर अक़्ल के अन्धों ने लड़कियों और लड़कों की एक ही जगह तालीम शुरु करा दी और शारदा एक्ट जारी कराया जिसके माना यह थे कि अठ्ठारह साल से पहले कोई निकाह़ न कर सके। फिर लड़कियों और लड़कों को सिनेमा के इश्क़िया ड्रामें दिखाए, बेहूदा नाविलों की रोक थाम न की, जिसका मतलब साफ़ यह हुआ कि उनके जज़्बात को भड़काया गया और निकाह़ रोक कर भड़के हुए जज़्बात को पूरा होने से रोक दिया गया जिसका मन्शा सिर्फ़ यह है कि ह़राम कारी बढ़े, क्योंकि भड़की हुई शहवत जब ह़लाल रास्ता न

पाएगी तो ह़राम की तरफ़ ख़र्च होगी और ऐसा ही हो रहा है। अब इस वक़्त यह ह़ालत है कि जब स्कूलों, कालेजों की लड़कियां सुब्ह़ व शाम ज़र्क़ बर्क़ लिबास में रास्तों से आपस में मज़ाक़ व दिल लगी करती हुई, ज़ोर से बातें करती हुई, इत्र लगाए, दुपट्टा सर से उतारे हुए निकलती हैं तो मालूम होता है कि शायद हिन्दुस्तान में पेरिस आ गया और दर्दमन्द दिल रखने वाले ख़ून के आंसू रोते हैं। अकबर इलाहाबादी ने ख़ूब फ़रमाया है:

बेपर्दा कल जो आई नज़र चन्द बीबियां।
अकबर ज़मीं में ग़ैरते क़ौमी से गड़ गया।।
पूछा जो उनसे आपका पर्दा किधर गया।
कहने लगीं कि अक़्ल पे मर्दों की पड़ गया।।

कोशिश करो कि तुम्हारी लड़कियां ह़यादार और अदब वाली बनें ताकि उनकी औलाद में यह भी औसाफ़ पाए जाएं। डा० इक़बाल ने क्या ख़ूब फ़र्मायाः

बे अदब मां बा अदब औलाद जन सकती नहीं।
मादने ज़र, मादने फ़ौलाद बन सकती नहीं।।

याद रखो! इस ज़माने में इन स्कूलों और कालेजों ने क़ौम में इन्क़ेलाब पैदा कर दिया है। आज तरीक़ा यह है कि अगर किसी क़ौम का नक़्शा बदलना हो तो उस क़ौम के बच्चों को कालेज की तालीम दिलाओ, बहुत जल्द उस क़ौम की ह़ालत बदल जाएगी अकबर ने ख़ूब कहा है:

यूं क़त्ल से बच्चों के वो बदनाम न होता।
अफ़सोस कि फ़िरऔन को कालेज की न सूझी।।

और दोस्तो! बाज़ स्कूलों और कालेजों के नाम में इस्लाम का नाम भी लगा होता है, यानी उनका नाम होता है "इस्लामिया स्कूल, इस्लामिया कालेज" इस नाम से धोखा न खाएं, इस्लामिया स्कूल, इस्लामिया कालेज नाम रखना फ़क़त मुस्लिम क़ौम से इस्लाम के नाम पर चन्दा वसूल करने के लिए है, वर्ना काम सब कालेजों का क़रीब क़रीब यकसां है। ग़ज़ब तो देखो कि नाम इस्लामिया स्कूल और तातील (छुट्टी) होती है इतवार के दिन। इस्लाम में तो बड़ा दिन जुमा का है, हर काम अंग्रेज़ी में, वहां के तल्बा के अख़लाक़ और आदाब अंग्रेज़ी, फिर यह इस्लामिया स्कूल कहां रहा। बाज़ स्कूलों के नाम बजाय इस्लामिया स्कूल मुहम्मडन स्कूल या मुहम्मडन कालेज रख दिए गए। अल्लाह तआ़ला ने हम मुसलमानों का

नाम रखा है "मुस्लिमीन" कुरआन फ़रमाता है: "هُوَ سَمّٰكُمُ الْمُسْلِمِيْنَ" अल्लाह तआ़ला ने तुम्हारा नाम मुसलमान रखा, मगर ईसाइयों की त़रफ़ से हमारा नाम "मुहम्मडन" रखा गया। हम लोगों को वही नाम पसन्द आया जो ईसाइयों ने हम को दिया, ग़रज़ेकि उन स्कूलों से अपनी लड़कियों को बचाओ और अपने लड़कों को भी वहां ज़रूरतन तालीम दिलवाओ, मगर उनका दीन व मज़हब संभाल कर। इसी तरह़ लड़कियों को घर पर जो मास्टर से पढ़वाते हैं या ईसाई औ़रतों या लेडियों से तालीम दिलवाते हैं, वह सख़्त ग़ल्ती करते हैं। बहुत जगह देखा गया कि लड़कियां मास्टरों के साथ भाग गईं और उन आवारा उस्तानियों के ज़रिए हज़ारों फ़ित्ने फैले। मुझे यह मालूम नहीं होता कि आख़िर लड़कियों को इस क़दर आला तालीम की ज़रूरत क्या है, उनको तो वह चीज़ें पढ़ाओ जिनसे उन्हें काम पड़ता है, उनका सारा ख़र्चा तो शौहरों के ज़िम्मे होगा फिर उनको इस क़दर तालीम से क्या फ़ाइदा? ग़रज़ेकि अपनी औलाद को दीनदार और हुनर मन्द बनाओ कि इसी में दीन व दुनिया की भलाई है। अपनी लड़कियों को सिर्फ़ ख़ातूने जन्नत फ़ातिमा ज़हरा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा के नक़्शे क़दम पर चलाओ, उनकी पाक ज़िन्दगी का नक़्शा वह है जो डा० इक़बाल ने इस त़रह़ बयान फ़र्माया:

आं अदब परवरदए शर्मो ह़या।
आसिया गरदानो लब कुरआं सरा।।

उस शर्म व ह़या की परवरदा ख़ातून का तो ये आ़लम है कि हाथों में चक्की है और ज़ुबान पर कुरआन की तिलावत।

माख़ूज़ अज़ इस्लामी ज़िन्दगी



परदा और हमारा मुआ़शरा

अज़: मुह़म्मद अ़ब्दुल मोबीन नोमानी क़ादिरी बरकाती

इस्लाम एक मुकम्मल दीन है जिसमें ज़िन्दगी गुज़ारने के तमाम पहलुओं से मुतअ़ल्लिक़ अह़काम बयान किए गए हैं ताकि एक मुसलमान को अपनी ज़िन्दगी की ज़रूरतों में दूसरे किसी नेज़ाम की तरफ़ न देखना पड़े, इस्लाम के ज़रूरी अह़काम में एक हुक्म पर्दे का भी है, यानी मर्द नामह़रम औ़रतों से पर्दा करे और औ़रत नामह़रम मर्दों से। पर्दे का हुक्म कुरआने पाक में भी है और अह़ादीस़ में भी, लेकिन अफ़सोस! हमारे मुआ़शरे में बेपर्दगी की रस्म आ़म है, जो औ़रतें सिरे से पर्दा ही नहीं करतीं उन को तो जाने दीजिए लेकिन जो औ़रतें बापर्दा और शरीफ़ कहलाती हैं उनका भी ह़ाल यह है कि रस्मों और आ़दतों की वजह से बहुत मौक़ओं पर पूरे तौर से पर्दा नहीं करतीं, या तो वह शरीअ़त के अह़काम व मसाइल से यकसर नावाक़िफ़ हैं या वाक़िफ़ तो हैं लेकिन रस्म व रवाज ने उन पर अपना ऐसा तसल्लुत़ (क़ब्ज़ा) जमा रखा है कि इस्लाम के ज़रूरी अह़काम पर अ़मल करने के लिए वह अपने अन्दर कोई जज़्बा ही नहीं पातीं, मस़्लन आ़म तौर से औ़रतें जेठ देवर से पर्दा नहीं करतीं हालांकि उनसे पर्दे का सख़्त हुक्म है, इस लिए इस्लामी औ़रतों को रवाज छोड़ कर कुरआन व ह़दीस़ और अल्लाह व रसूल (अ़ज़्ज़ व जल्ल व सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) के हुक्मों पर चलना चाहिए। पर्दे के ज़रूरी अह़काम फ़िक़्ह की किताबों में तफ़सील से लिखे हुए हैं वहां से मालूम करें, मस़्लन बहारे शरीअ़त, क़ानूने शरीअ़त, जन्नती ज़ेवर, सुन्नी बहिश्ती ज़ेवर वग़ैरा कुतुब (किताबों) में मुलाह़ज़ा करें। सरे दस्त (लगे हाथ) यहां सिर्फ़ उन ग़फ़लतों की तरफ़ इशारे किए जा रहे हैं जिनका आ़म तौर से हमारी इस्लामी बहनें शिकार हैं।

देवर से पर्दा- सह़ीह़ बुख़ारी व सह़ीह़ मुस्लिम शरीफ़ में अ़क़बा बिन आ़मिर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से रवायत है कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम ने फ़र्माया: औ़रतों के पास जाने से बचो (यानी जिन औ़रतों से पर्दा है उनके पास न जाओ)। एक शख़्स़ ने अ़र्ज़

किया या रसूलुल्लाह देवर के मुतअल्लिक़ क्या हुक्म है? फ़र्मायाः देवर मौत है। (बुख़ारी व मुस्लिम व मिश्कात 268)

यानी देवर के सामने होना गोया मौत का सामना है कि यहां फ़ित्ने का ज़्यादा एहतेमाल है और यह कि औरत को देवर से ऐसे ही भागना चाहिए जैसे आम तौर से लोग मौत से भागते हैं। वाज़ेह़ रहे कि देवर और जेठ का एक ही हुक्म है, हां अगर जेठ बिल्कुल बूढ़ा हो जाए तो उसके हुक्म में तख़फ़ीफ़ होगी।

आला ह़ज़रत मुजद्दिदे मिल्लत इमाम अह़मद रज़ा बरैलवी कुद्दुस सिर्रोहु फ़तावा रज़विया शरीफ में फ़रमाते हैं:"जेठ और देवर से पर्दा वाजिब है।"(फ़तावा रज़विया, जि०9, स०237)

पीर से पर्दा- औरत का पीर भी अगर ग़ैर महरम है तो उससे भी पर्दा है, इस लिए मुरीदा औरत या लड़की को अपने पीर से भी पर्दा करना चाहिए और पीर के लिए भी यह जाइज़ नहीं कि औरत का हाथ पकड़ कर उसकी बैअ़त करे। हज़रत आयशा रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हा ने सरकारे दोआ़लम सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की औरतों से बैअ़त के बारे में फ़रमायाः

"औरतों की बैअ़त बज़रीअ़ए कलाम होती थी, खुदा की क़सम कभी भी हुज़ूर का हाथ किसी औरत के हाथ से बैअ़त के वक़्त मस नहीं हुआ।""(बुख़ारी शरीफ़, जि०2, स०726)

आ़ला ह़ज़रत इमामे अहले सुन्नत मुजद्दिदे मिल्लत कुद्दुस सिर्रोहु फ़रमाते हैं:

"पर्दा के बाब में पीर और ग़ैर पीर हर अजनबी (मर्द) का हुक्म यकसां है, जवान औ़रत को चेहरा खोल कर भी सामने आना मना है और बूढ़ियों के लिए जिससे एह़तेमाले फ़ित्ना न हो मोज़ायक़ा नहीं।" (फ़तावा रज़विया, जि०9, स०102)

उस्ताद से पर्दा- यूं ही शागिर्द औरत या जवान लड़की बल्कि जो क़रीबुल बुलूग़ हो उसको भी अपने ना महरम उस्ताद से पर्दा करना फ़र्ज़ है। अगर मजबूरन अजनबी मर्दों से पढ़ना ज़रूरी हो तो पूरे पर्दे का लिहाज़ करना चाहिए, और अगर मुअ़ल्लेमात दस्तयाब हों तो उन ही से तालीम ह़ासिल करे, यूं ही जवान लड़के लड़कियों की मख़्लूत (मिली हुई) तालीम तो ज़हरे क़ातिल है। ख़ालिस बच्चियों के मदारिस या स्कूल ही में

अपनी बच्चियों को भेजना चाहिए वर्ना गुनाह भी है और बेह़याई और बद किरदारी का बहुत ख़तरा भी, आदमी दुनिया का नुक़्सान हो तो ख़तरात से बचता है, जहां ह़या, इफ़्फ़त और पारसाई को ख़तरा हो तो वहां से और ज़्यादा ही बचना चाहिए। मगर अफ़सोस! आज़ादी और फ़ैशन ने हमारी निगाहों पर पर्दे डाल रखे हैं कि खुली ह़क़ीक़त भी नज़र नहीं आती।

फेरी वाले से पर्दा- आज कल आ़म दिनों में भी और ख़ास त्योहार के मवाक़े पर भी फेरी वाले दरवाज़े दरवाज़े घूम कर घरेलू और सिंगार का सामान फ़रोख़्त करते हैं। उनकी आवाज सुन कर हमारी माएं बहनें झट दरवाज़े के बाहर या दरवाज़ों पर आकर खड़ी हो जाती हैं और सौदे ख़रीदना शुरू कर देती हैं और इस तरह़ खुल कर बातें और मोल भाव करती हैं जैसे फ़ेरी वाला उनका सगा भाई हो, यह भी नाजाइज़ और बहुत ग़लत ह़रकत है इससे बचना भी ज़रूरी है, घर के बच्चे या मर्द जो भी हों उनको भेज कर सामान मंगाएं और ख़रीदें तो ह़रज नहीं लेकिन ऐसा लगता है कि औ़रतें सामान ख़रीदने के साथ अपने हुस्न की नुमाइश का शौक़ भी पूरा करने लगती हैं जो नेहायत दर्जे की बेह़याई और गुनाह का काम है। अल्लाह तआ़ला नबीए पाक सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की अज़्वाजे मुतह्हेरात (पाक बीवियों) से फ़रमाता है:

وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ الْجَاهِلِيَّةِ الْأُوْلٰى. (الاحزاب:٣٣/٣٣)

यानी नबी की बीवियो! तुम अपने घरों में ठहरी रहो और बे पर्दा न रहो जैसे अगली जाहिलियत की बेपर्दगी। (कन्ज़ुल ईमान)

इस आयत से बेपर्दा बाहर निकलने की मोमानअ़त साफ़ ज़ाहिर है, और जब यह मोमानअ़त अज़्वाजे मुतह्हरात को है तो आ़म मुस्लिम ख़्वातीन के लिए यह हुक्म और सख़्त होगा। इससे हमारी मुस्लिम ख़्वातीन और इस्लामी बहनें इ़बरत (सबक़) ह़ासिल करें और बेपर्दगी से बचें। ह़दीस़ शरीफ़ में है:

اَلْمَرْأَةُ عَوْرَةٌ فَإِذَا خَرَجَتِ اسْتَشْرَفَهَا الشَّيْطَانُ.

औ़रत पर्दे में रहने की चीज़ है जिस वक़्त बेपर्दा बाहर निकलती है तो शैतान उसको ताकता है।

(तिरमिज़ी शरीफ़ जि०1, स०140)

हज़रत जाबिर रज़िअल्लाहु तआ़ला अ़न्हु से एक और ह़दीस़ है हुज़ूरे अक़दस सल्लालु तआ़ला अ़लैहि वसल्लम ने फ़र्मायाः

إِنَّ الْمَرْأَةَ تُقْبِلُ فِيْ صُوْرَةِ شَيْطَانٍ وَتُدْبِرُ فِيْ صُوْرَةِ شَيْطَانٍ.

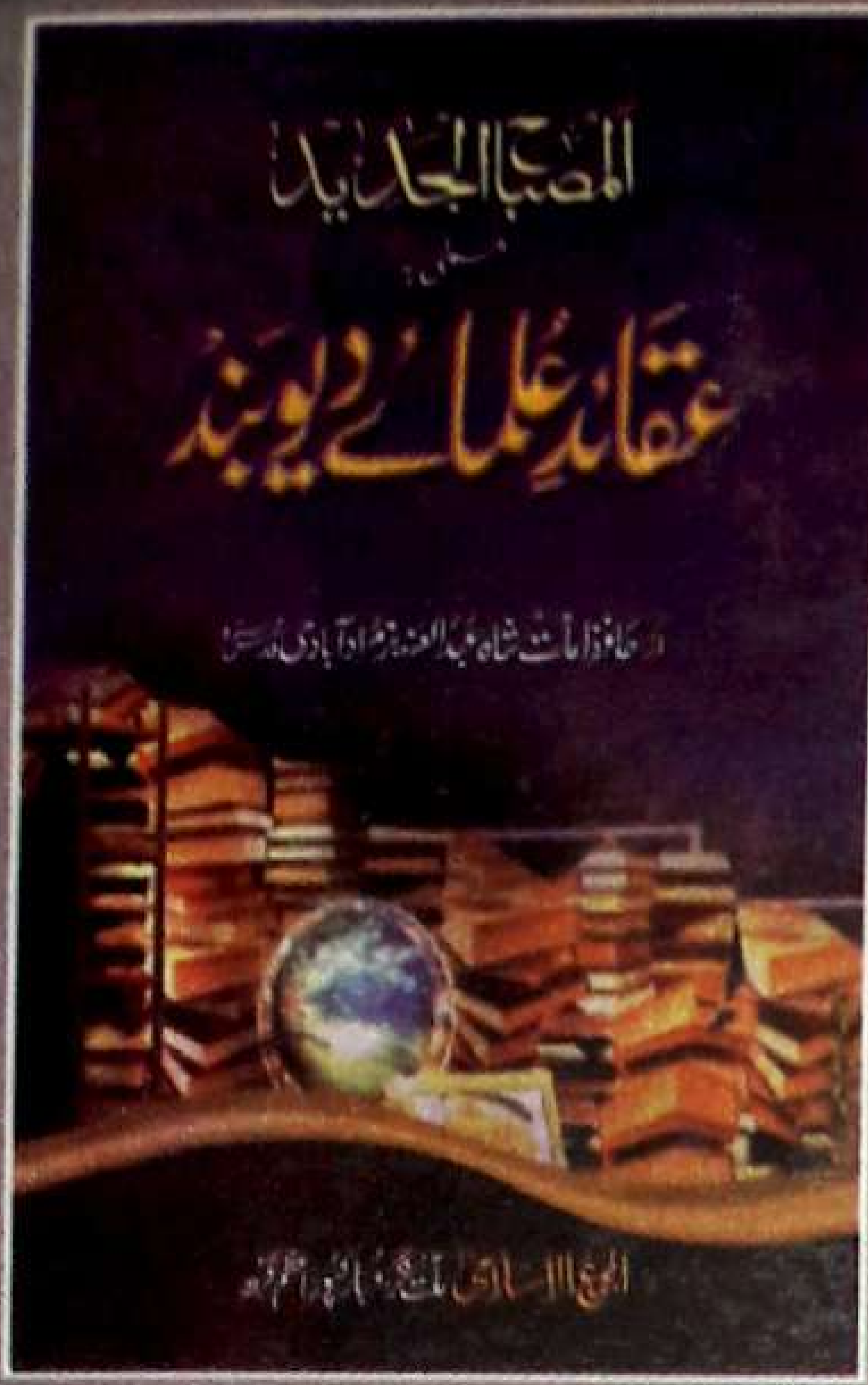
बेशक औ़रत जब आती है तो शैतान की सूरत में आती है और जाती है तो शैतान की सूरत में।(मिश्कात, स०268)

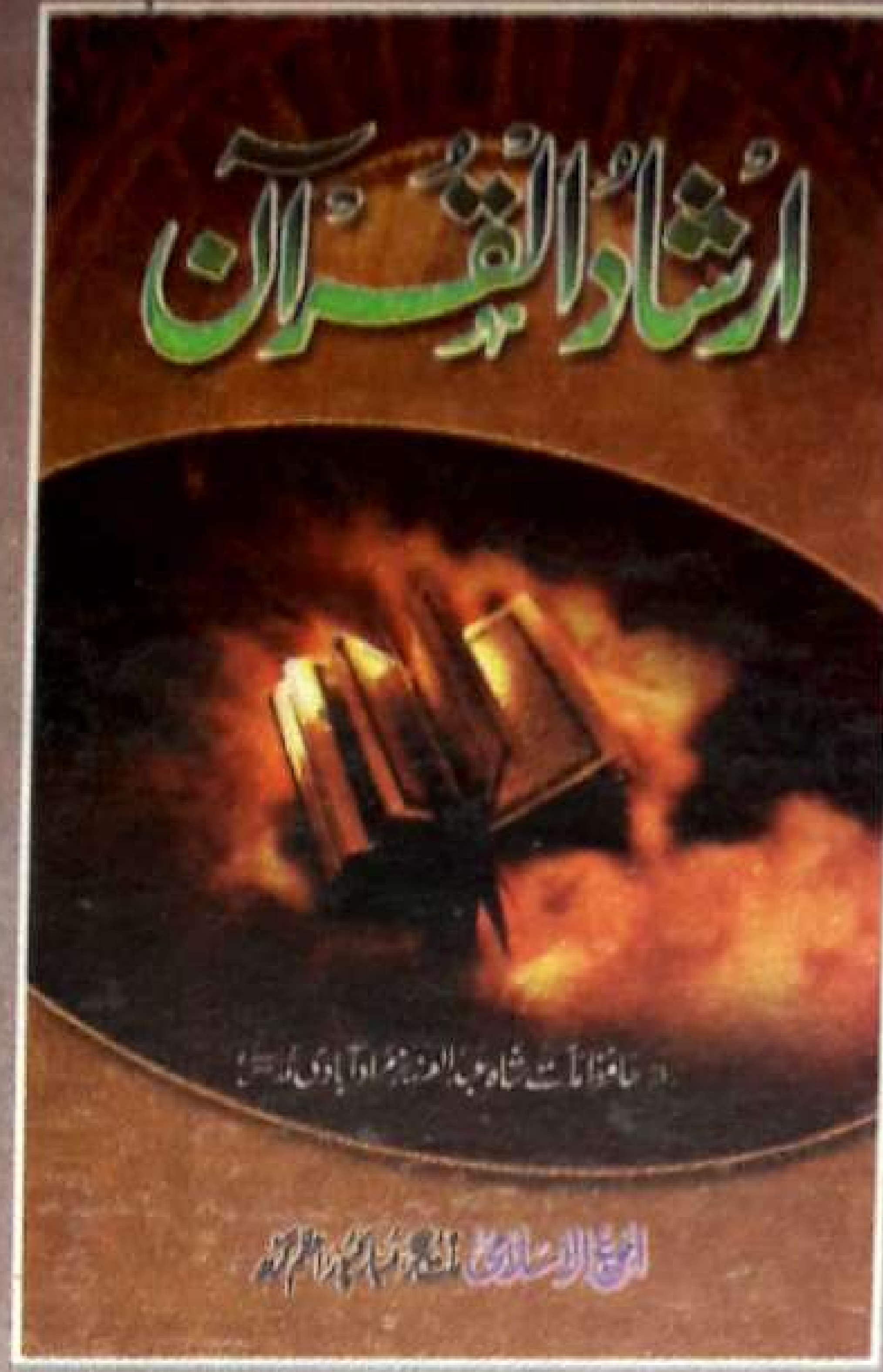
यानी औ़रत जब बेपर्दा निकलती है तो उसका आना जाना शैतान की त़रह़ बुराई की दावत देता है और ऐसी औ़रतें शैतान का रोल अदा करती हैं।

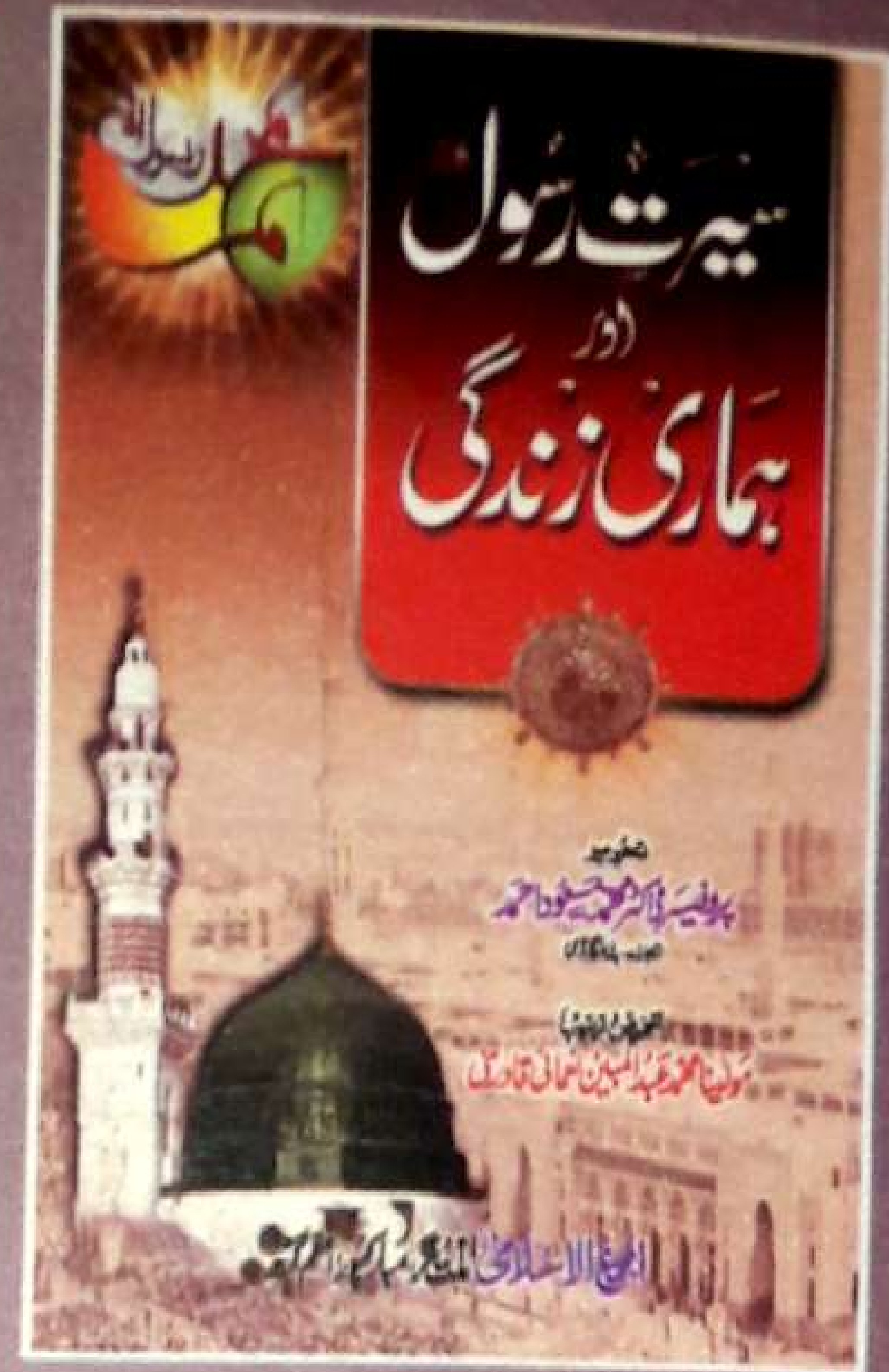
इन दोनों ह़दीसों से वह औ़रतें सबक़ लें जो फेरी वालों के सामने बे पर्दा आकर खड़ी हो जाती हैं और फिर सामान ख़रीद कर वापस जाती हैं, बेशक यह औ़रतें इन ह़दीसों की मिस्दाक़ हैं कि ख़ुद भी गुनहगार होती हैं और दूसरों को भी गुनहगार और शैतान के मिस्दाक़ बनाती हैं। जवान लड़कियां भी इस हुक्म में दाख़िल हैं बल्कि जो क़रीबुल बुलूग़ (जवान होने के क़रीब) हों उनको भी बचना चाहिए।

दुकानदारों से पर्दा- यूं ही आजकल औरतें बहुत जम कर मार्केटिंग करती और सौदे ख़रीदती नज़र आती हैं। उनका ह़ाल यह है कि घर से तो नक़ाब के साथ निकलती हैं लेकिन दुकान पर जाने के बाद अपना पर्दा उठा देती हैं, गोया दुकानदार से पर्दा ही नहीं, अव्वलन (सबसे पहले) तो ख़्वातीन को बाज़ारों में सौदे ख़रीदने के लिए जाना ही नहीं चाहिए और अगर ज़रूरत पड़ने पर जाना ही हो तो जैसे तमाम नामह़रमों से पर्दा है वैसे ही दुकानदार से भी पर्दा ज़रूरी है चाहे दुकानदार मुस्लिम हो या ग़ैर मुस्लिम, यूं ही मोल भाव करने में ज़रूरत से ज़्यादा न बोलें और लगावट की बातें हर्गिज़ न करें, दीगर अजनबी मर्दों से भी ज़रूरी बात करने में इसका लेह़ाज़ ज़रूरी है कि लचकदार बातें न करें वर्ना गुनहगार होंगी और उनसे जो फ़ित्ने पैदा होंगे उनके बुरे असरात अलग अपना रंग दिखाएंगे। अल्लाह तआ़ला इस्लामी औ़रतों को इस्लामी अह़काम पर चलने और पर्दे के एहतेमाम की तौफ़ीक़ बख़्शे। आमीन। बिजाहे सैय्यदिल मुरसलीन अ़लैहे व अ़ला आलिहि व सह़बिहिस्सलातो वत्तस्लीम।





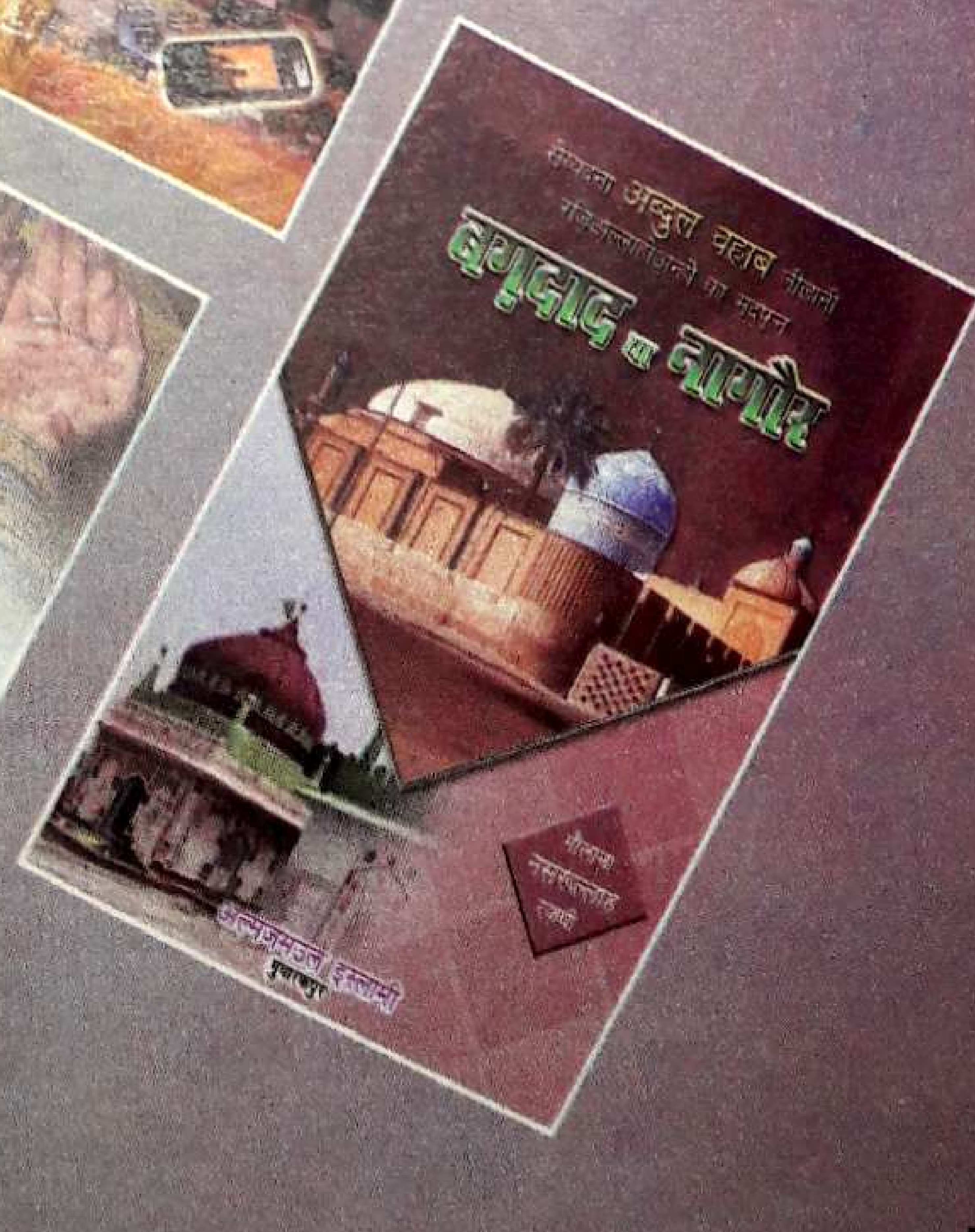












Rs. 20/-

AL-MAJMAUL ISLAMI

Millat Nagar, Mubarakpur, Azamgarh (U.P) PIN-276404, Mob.: 9839387680